कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 304, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | बुधवार 30 नवंबर 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

पहले चरण में 89 सीटों पर मतदान होगा, इसके लिए 788 उम्मीदवार मैदान में

गुजरात: थमा पहले फेज का चुनावी शोर

अहमदाबादः गुजरात विधानसभा चुनाव के पहले चरण में 1 दिसंबर को मतदान होगा। इसके लिए चुनाव प्रचार मंगलवार शाम 5 बजे थम गया। पहले चरण में 89 सीटों पर मतदान होगा, इसके लिए 788 उम्मीदवार मैदान में हैं। इस दौरान मोरबी, कच्छ, राजकोट, पोरबंदर और जूनागढ़ जैसी सीटों पर वोटिंग होगी। 19 जिलों में होने वाली वोटिंग में 2 करोड़ से ज्यादा वोटर्स अपने मत का प्रयोग करेंगे।

6 सीटों पर लड़ रही है ओवैसी की पार्टीः पहले चरण में बीजेपी और कांग्रेस सभी 89 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। आम आदमी पार्टी ने 88 सीटों पर अपने उम्मीदवारों को उतारा है। बहुजन समाजवादी पार्टी ने भी 57 प्रत्याशियों टिकट दिया है। वहीं, असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी एआईएमआईएम ने सिर्फ 6 कैंडिडेट मैदान में हैं।

20 दिन में बीजेपी ने 160 जनसभाएं और रैलियां कींः चुनाव प्रचार के आखिरी दिन केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने तीन जिलों में चार जनसभाओं को संबोधित किया। बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा भावनगर ने रोड शो किया। केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने मांडवी और गांधीधाम में प्रचार किया। इन क्षेत्रों में बीजेपी ने बीते 20 दिन में 160 से ज्यादा जनसभाएं, रैली और रोड शो किए हैं।

दो फेज में होगी वोटिंगः गुजरात विधानसभा चुनाव के लिए दो फेज में एक और पांच दिसंबर को वोट डाले जाएंगे।182 सीटों के लिए हो रहे इस चुनाव में 1 दिसंबर को 89 सीटों पर और 5 दिसंबर को 93 सीटों पर वोटिंग होगी। नतीजे 8 दिसंबर को यानी हिमाचल विधानसभा चुनाव के साथ ही आएंगे। राज्य में इस बार 4.6 लाख लोग पहली बार वोट करेंगे। गुजरात विधानसभा का कार्यकाल 18 फरवरी 2023 को खत्म हो रहा है।

सीएम पद के दावेदार कौन-कौन ?
अभी बीजेपी की ओर से भूपेन्द्र पटेल गुजरात के मुख्यमंत्री हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सी.आर.पाटिल पहले ही संकेत दे चुके हैं कि राज्य में कोई बदलाव नहीं होगा। बीजेपी के अलावा कांग्रेस और आप भी मैदान में हैं। हालांकि दोनों पार्टियों ने अब तक सीएम कैंडिडेट की घोषणा नहीं की है। बात कांग्रेस की करें तो पार्टी में भरत सोलंकी, अर्जुन मोढवाडिया, शक्तिसिंह गोहिल उट पद के लिए रेस में सबसे आगे हैं।

विवादित बयानः अब खड़गे ने पीएम मोदी को रावण कहा

अहमदाबादः गुजरात चुनाव के लिए जारी प्रचार में कांग्रेस नेता मल्लिकार्जुन खड़गे ने एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर बयान दिया। अहमदाबाद में सोमवार को जनसभा के दौरान खड़गे ने कहा कि क्या रावण की तरह मोदी के 100 मुख हैं? मुझे समझ नहीं आता। सूरत में जनसभा के दौरान खड़गे ने खुद को अछूत और प्रधानमंत्री मोदी को झूठों का सरदार बनाया था।

प्अहमदाबाद में खड़गे का रावण वाला बयानः बेहरामपुरा में जनसभा के दौरान खड़गे ने कहा- प्रधानमंत्री बोलते हैं कि कहीं और मत देखो। मोदी को देखकर वोट दो। कितनी बार तुम्हारी सूरत देखें? हमने कॉरपोरेशन चुनाव में तुम्हारी सूरत देखी। एमएलए चुनाव में, एमपी इलेक्शन में सूरत देखी। हर जगह पर, क्या रावण की तरह आपके 100 मुख हैं। मुझे समझ नहीं आता। संबित पात्रा ने कहा- ये सिर्फ पीएम नहीं, गुजरात और देश का अपमानः संबित पात्रा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को रावण कहना घोर अपमान है। सबसे पहले कांग्रेस की चीफ रह चुकीं सोनिया गांधी ने मोदी को मौत का सौदागर कहकर संबोधित किया था। आखिर इन लोगों को क्या मिलता है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने पीएम को रावण कहा है। इस प्रकार की भाषा का इस्तेमाल कांग्रेस की मानसिकता को दशार्ता है।

ये सिर्फ मोदी जी का अपमान नहीं, बल्कि पूरे देश और गुजरात का अपमान है। ये सिर्फ खड़गे का बयान नहीं है, बल्कि सोनिया और राहुल का बयान है।

सूरत में कहा था- हम अछूत, तुम्हारी चाय कोई पीता तो हैः खड़गे ने सूरत की सभा में जो कुछ कहा, उसे हम ज्यों का त्यों यहां पेश कर रहे हैं। खड़गे बोले, "आपके जैसा आदमी, जो हमेशा क्लेम करते हैं, मैं गरीब हूं। अरे भाई, हम भी गरीब हैं। हम तो गरीब से गरीब हैं। हम तो अछूतों में आते हैं। कम से कम तुम्हारी चाय तो कोई पीता है, मेरी चाय भी नहीं पीता कोई। और फिर आप बोलते हैं- मैं गरीब हूं। मेरे को किसी ने गालियां दीं, मेरी तो हैसियत क्या है।"

'कोविड-19 वैक्सीन लगवाने से हुई मौतों के लिए सरकार जिम्मेदार नहीं'

नई दिल्लीः कोरोना टीकाकरण से हुए प्रभाव के लिए सरकार को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। केंद्र ने सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर करके ये बात कही है। केंद्र ने कहा कि टीके के कारण हुई मौत के मामलों के लिए सिविल कोर्ट में मुकदमा दायर कर मुआवजे की मांग की जा सकती है। केंद्र ने ये भी कहा कि मृतकों और परिजनों के प्रति उनकी संवेदनाएं है, लेकिन टीके के किसी भी प्रतिकूल प्रभाव के लिए सरकार को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है। केंद्र ने इस बात पर भी जोर दिया कि कोविड-19 के टीके लगवाने को लेकर कोई भी कानूनी बाध्यता नहीं है।

उलेमा युवाओं को चरमपंथ के दुष्प्रभाव से बचायेः डोभाल

नई दिल्ली। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकर अजीत डोभाल ने सोमवार को इस्लामिक उलेमाओं से युवाओं को चरमपंथ के दुष्प्रभाव से बचाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि उन्हें इस्लाम के असल सहिष्णु और संतुलित सिद्धांत लोगों के सामने लाने चाहिए ताकि उग्रवाद से मुकाबला किया जा सके। डोभाल आज भारत और इंडोनिशया के भारतीय इस्लामिक सांस्कृतिक केन्द्र में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। ह्यभारत और इंडोनेशिया में अंतरधार्मिक शांति और सामाजिक सद्भाव की संस्कृति को बढ़ावा देने में उलेमा की भूमिका पर आयोजित संवाद में उन्होंने उद्घाटन भाषण में उक्त बातें कहीं। दिन भर चलने वाले इस कार्यक्रम में उलेमा इस्लामः निरंतरता और परिवर्तन,

सामंजस्यपूर्ण अंतर-विश्वास समाज और ह्यभारत और इंडोनेशिया में कट्टरता और उग्रवाद का मुकाबला विषयों पर तीन सत्रों में भाग लेंगे। डोभाल ने कहा कि भारत और इंडोनेशिया को सभ्य समाज होने के नाते चरमपंथ का मुकालबा करने के लिए समान नजरीया पेश करना चाहिए। दोनों देश आतंकवाद और चरमपंथ का समान रूप से सामना कर रहे हैं। दोनों देशों में दुनिया की एक बड़ी मुस्लिम आबादी रहती है। इंडोनेशिया जहां सबसे ज्यादा मुसलमानों का घर है, वहीं भारत में इस्लाम को मानने वाली दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी आबादी है। अजीत डोभाल ने कहा कि हमें युवाओं पर विशेष तौर पर ध्यान देना चाहिए। वे चरमपंथी विचारधारा से सबसे ज्यादा और शीघ्र प्रभावित होते हैं। उन्हें इससे बचाने के लिए उनकी ऊर्जा को सही दिशा में लगाना होगा। सही दिशा में ऊर्जा लगने से वे समाज परिवर्तन के अग्रदूत और प्रगतीशील समाज के हिस्से बनेंगे। इसके लिए जरूरी है कि समुदायों के बीच सह अस्तित्व की सोच को बढ़ावा देना और उसके खिलाफ किए जा रहे भ्रामक प्रचार का मुकाबला करना है। उन्होंने कहा कि इस्लाम ने वंचितों को अपनाया और सहिष्णुता का संदेश दिया।

'सुरक्षाबलों ने सभी चुनौतियों का दिया मुंहतोड़ जवाब'

नई दिल्लीः रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह सशस्त्र सेना झंडा दिवस कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व कॉन्क्लेव के चौथे संस्करण में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। रक्षा मंत्रालय ने इसकी जानकारी दी। आर्म्ड फोर्सेज फ्लैग डे उरफ कॉन्क्लेव में राजनाथ सिंह ने देश की सेनाओं के शौर्य, पराक्रम और बलिदान को नमन किया। राजनाथ ने कहा कि, 'आज हमारा देश जिस गति से आगे बढ़ रहा है उसमें देश की सेना का मुख्य योगदान है। आज यह कार्यक्रम उन वीरों को समर्पित है जिनके त्याग और बलिदान की

वजह से हमारा देश पूरी तरह से सुरक्षित है'। राजनाथ ने आगे कहा कि 'हमारी आर्म्ड फोर्सेज ने बड़ी मुस्तैदी के साथ सभी चुनौतियों का मुंहतोड़ जवाब दिया है और इस दौरान हमारे बहुत सारे वीरों ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया है इसलिए हमारा पूरा दायित्व बनता है कि हम उनके परिजनों की पूरी मदद करें।'

प्रामाणिक जानकारी प्रस्तुत करना मीडिया की प्रमुख जिम्मेदारीः अनुराग ठाकुर

नई दिल्ली। केंद्रीय सूचना और प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने मंगलवार को कहा कि प्रामाणिक जानकारी प्रस्तुत करना मीडिया की प्रमुख जिम्मेदारी है और तथ्यों को सार्वजनिक डोमेन में डालने से पहले ठीक से जांच की जानी चाहिए। एशिया-पैसिफिक ब्रॉडकास्टिंग यूनियन जनरल असेंबली 2022 के उद्घाटन समारोह में बोलते हुए उन्होंने कहा कि जिस गति से सूचना प्रसारित की जाती है वह महत्वपूर्ण है लेकिन उसके तथ्यों की सटीकता

भी प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि सोशल मीडिया के प्रसार के साथ ही फर्जी खबरों का भी प्रसार हुआ है। इसके लिए सरकार ने असत्यापित खबरों और लोगों को सच्चाई पेश करने के लिए प्रेस सूचना ब्यूरो में तथ्य जांच इकाई की स्थापना की गई है। उन्होंने सार्वजनिक प्रसारकों दूरदर्शन और ऑल इंडिया रेडियो को हमेशा सच्चाई के साथ खड़े रहने और अपनी सच्ची रिपोर्टिंग के लिए लोगों का विश्वास जीतने का श्रेय दिया।

अनुराग ठाकुर ने कोरोना महामारी के दौरान घरों में फंसे लोगों की मदद के करने का श्रेय मीडिया को देते हुए कहा कि यह मीडिया ही था जिसने लोगों को बाहरी दुनिया से जोड़ा।

टेक्नोलॉजी आज भू-राजनीति के केंद्र में: जयशंकर

नई दिल्लीः राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में ग्लोबल टेक्नोलॉजी समिट 2022 आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन में मंगलवार को भारतीय विदेश मंत्री एस. जयशंकर शामिल हुए। उन्होंने कहा कि भारत का विकास इंडियन टेक्नोलॉजी के डेवलपमेंट की गहराई से जुड़ा हुआ है। साथ ही कहा कि टेक्नोलॉजी आज भू-राजनीति के केंद्र में है। टेलीकॉम की डोमेन में भारत को विश्वसनीय की अवधारणा से देखा जाता है। मुझे लगता है कि हम आने वाले दिनों में डिजिटल पक्ष पर भी भारत की विश्वसनीय के बारे में सुनेंगे। उन्होंने कहा कि यदि हम भारत की भू-राजनीतिक स्थिति को देखते हैं, तो यह राजनीति, ऊर्जा, अर्थशास्त्र का शुद्ध मूल्यांकन होना चाहिए। लेकिन तेजी से जहां हमारे तकनीकी हित निहित हैं।

दुनिया में हर चीज को बनाया जा रहा है हथियारः ग्लोबल टेक्नोलॉजी समिट में विदेश मंत्री ने कहा कि हमारा डेटा कहां जा रहा है यह अब व्यवसाय और अर्थशास्त्र का नहीं बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा का विषय है। इस दुनिया में हर चीज को हथियार बनाया जा रहा है। मुझे अपना दृष्टिकोण बदलना होगा कि मुझे अपने हितों की रक्षा कहां करनी चाहिए।

दुश्मनों के ड्रोन को नष्ट करने के लिए चीलों को दी जा रही खास ट्रेनिंग

सीमा रेखा पर जवान की पैनी नजर

नई दिल्ली/औलीः भारतीय सेना के जवान सीमा रेखा पर दुश्मनों की गतिविधियों पर पैनी नजर बनाए हुए हैं। इसी कड़ी में अब भारतीय सेना प्रशिक्षित चीलों का भी इस्तेमाल कर रही है। भारतीय सेना के ये चील दुश्मनों के ड्रोनों पर खास नजर रख रहे हैं। इन प्रशिक्षित चीलों का सेना अपनी तरह का पहला प्रयोग कर रही है। उत्तराखंड के औली में भारतीय सेना युद्ध अभ्यास कर रही है। इस दौरान भारतीय सेना ने आतंकविरोधी अभियानों के लिए हमलावर कुत्तों के साथ भी प्रदर्शन किया।

ड्रोन के खतरे से निपटने में मिलेगी मददः ऐसी क्षमता सुरक्षा बलों को सीमा पार से पंजाब और जम्मू-कश्मीर में भारतीय क्षेत्रों में आने वाले ड्रोन के खतरे से निपटने में मदद कर सकती है। ऐसे कई मामले सामने आए हैं जहां पाकिस्तान की तरफ से आने वाले ड्रोन ने जम्मू-कश्मीर और पंजाब में ड्रग्स, बंदूकें और रुपयों की खेप गिराई गई। हाल ही में 24 नवंबर को, जम्मू-कश्मीर पुलिस ने जम्मू के सांबा जिले में एक पाकिस्तानी ड्रोन द्वारा गिराए गए हथियारों और भारतीय मुद्रा की एक खेप बरामद की थी।

एनआईए की दिल्ली समेत कई राज्यों में छापेमारी

आतंकियों, गैंगस्टरों और ड्रग तस्करों के बीच सांठगांठ का भंडाफोड़

नई दिल्लीः राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने मंगलवार को उत्तर प्रदेश, पंजाब और दिल्ली समेत कई राज्यों में छापेमारी की। समाचार एजेंसी एएनआइ ने अपने सूत्रों के हवाले से बताया कि गैंगस्टर के ठिकानों का भंडाफोड़ करने के लिए एनआइए ने मंगलवार सुबह दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, हरियाणा और यूपी के कई ठिकानों पर छापेमारी की है। भारत और विदेशों में स्थित आतंकियों, गैंगस्टरों और ड्रग तस्करों के बीच बढ़ रही सांठगांठ को खत्म करने

के उद्देश्य से एनआइए ने दिल्ली समेत चार राज्यों के छह से अधिक जिलों में छापेमारी की। एनआइए की यह छापेमारी गैंगस्टरों से जुड़े आवासीय और अन्य परिसरों में की जा रही है।

कई गैंगस्टरों से पूछताछ के बाद छापेमारी की बनी योजनाः यह छापे लारेंस बिश्नोई, नीरज बवाना, टिल्लू ताजपुरिया और गोल्डी बराड़ से जुड़े गिरोह के गठजोड़ पर केंद्रित हैं।

समितियों से डीएपी नदारद नकली खाद से पटा बाजार

अखंड भारत संदेश

सिरसा/प्रयागराज। गेंहू की बुवाई सर पर है, तो वहीं कालाबाजारी के चलते साधन सहकारी समितियों से डीएपी खाद नदारद है। मेजा तहसील स्थित साधन सहकारी समिति पिपरांव, लक्षन का पूरा में 460 बोरी डीएपी पहुंची है । उरूवा विकास खंड स्थित उपरौड़ा, शुक्लपुर, मदरा मुकुंदपुर, रामनगर, उरुवा, औंता सहित अन्य समितियों पर अब तक खाद नहीं पहुंच पाई है। जबकि मिश्रपुर, परानीपुर में खाद की उपलब्धता है, लेकिन ऊंट के मुंह में जीरे के समान है। इसी तरह मेजा विकासखंड में साधन सहकारी समिति तेंदुआ कला, साधन सहकारी समिति लक्षण का पूरा (मेजा), साधन सहकारी समिति नेवढ़िया, साधन सहकारी समिति कोहड़ार, साधन सहकारी समिति पथरा, साधन सहकारी समिति सुजनी-समोधा, साधन सहकारी समिति इटवा कला, साधन सहकारी समिति पिपरांव है। मजे की बात तो यह है कि बाजार में डीएपी भरपूर मात्रा में उपलब्ध है लेकिन वह भी नकली। किसानों का आरोप है कि जो खाद समितियों पर मिलनी चाहिए वह निजी दुकानों पर कैसे पहुंची। यही नहीं निजी दुकानों पर

प्रतापपुर क्षेत्र में नहीं मिल पा रही समय से डीएपी, किसान हैरान परेशान

अखंड भारत संदेश

प्रतापपुर। प्रतापपुर क्षेत्र के विभिन्न साधन सहकारी समितियों में काफी लंबी लाइन लग रही डीएपी खाद पहुंचने की सूचना पर सुबह से ही आसपास के गांवों से लोग बड़ी संख्या में किसान समिति परिसर में पहुंच जाते हैं लेकिन डीएपी उर्वरक खाद सहकारी समितियों में नही मिल पा रही हर कोई एक एक बोरी खाद के लिए परेशान दिखाई दे रहा है। लेकिन पर्याप्त मात्रा में खाद नहीं मिल पा रही है बुवाई का सीजन होने के कारण क्षेत्र की साधन सहकारी समितियों पर डीएपी के लिए किसान चक्कर काट रहे हैं। डिमांड के सापेक्ष आपूर्ति नहीं होने से किसान परेशान हैं।

प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र से पूर्व प्रत्याशी इंजीनियर घनश्याम पांडेय ने पर्याप्त मात्रा में सहकारी समितियों पर खाद उपलब्ध कराने की मांग की है और कहा कि इस समय किसानी का सीजन चल रहा है किसानों को खाद की सख्त जरूरत है लेकिन, खाद नहीं मिल पा रही है जिससे किसानों में आक्रोश व्याप्त है। उन्होंने कहा कि सोसाइटी और अधिकृत दुकानों से कुछ लोगों को 10-10 और 20-20 बोरी डीएपी दे दी जा रही है और कुछ लोगों को एक बोरी भी खाद नसीब नहीं हो पा रही है। घनश्याम पांडेय ने जिलाधिकारी एवं शासन एवं प्रशासन से मांग की है कि खाद का समुचित और व्यवस्थित वितरण सुनिश्चित कराया जाए जिससे किसानों के खेतों में समय रहते बुवाई हो सके। किसान एक-एक बोरी खाद के लिए मारामारी करके लाइन में लगे हुए है और लाइन में लगने पर भी खाद नहीं मिल रही।

मिलने वाली खाद की बोरी तो असली है लेकिन बोरी के अंदर खाद नकली है। जो ऊंचे दामों पर बेची जा रही है। कैसे करते हैं किसान पहचान किसानों ने बताया कि जो किसान खेती करता है वह असली, नकली की पहचान कर लेता है। किसान अपने तरीके से असली, नकली की पहचान करते है। जो डीएपी होता है उस बैग को खोल कर कुछ दाने मुट्ठी में भर लेते हैं। मुट्ठी में मुंह से फूंक मारते है। ऐसे में अगर इन दानों में नमी आ जाती है ओर दाने पिघलने लगते है तो वो असली डीएपी होता है। उन दानों में इस तरह की प्रक्रिया के बाद कोई बदलाव नहीं आता है तो उससे यह सावित होता है कि वह असली खाद नहीं है। ये किसानों का खुद का फामूर्ला हैं जो अक्सर वो नकली और असली को दिखाने के लिए अपनाते हैं।

हमसे जितना हो सकेगा हर संभव मदद करूंगा : विधायक पीयूष रंजन निषाद

अखंड भारत संदेश

नैनी। प्रेरणा परमार्थ आश्रम, मयार्दा पुरुषोत्तम नगर मोहब्बत गंज ऊपरहार चाका ब्लाक नैनी के अंतर्गत अघोरेश्वर महानिर्वाण दिवस पर आसपास के लगभग 25 गांव से 550 लोगों को शीत ऋतु में ठंड से बचने हेतु गर्म वस्त्र जैसे स्वेटर कंबल इत्यादि वितरित किया गया। उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में करछना विधान सभा के विधायक पीयूष रंजन उपस्थित होकर दीप प्रज्वलन करके कार्यक्रम का शुभारंभ किए। विधायक पीयूष रंजन ने अपने वक्तव्य में कहां की प्रेरणा परमार्थ आश्रम निस्वार्थ भाव से जो समाज की सेवा कर रहा है वह अत्यंत ही सराहनीय है और परम पूज्य अघोर मूर्ति श्री भैया जी का समाज के प्रति सभी कार्य अत्यंत ही अनुकरणीय रहता है। हमें भी उनके साथ एवं उनके सानिध्य में बढ़ - चढ़कर समाज सेवा में सहभागिता करनी चाहिए। हमसे जितना हो सकेगा हर संभव मदद करूंगा।

नैनी आईटीआई में अप्रेंटिस मेला आज

अखंड भारत संदेश

नैनी। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान नैनी प्रयागराज में दिनांक 30 नवंबर को अप्रेंटिस मेले का आयोजन किया गया है इसमें आईटीआई पास अभ्यर्थियों को अप्रेंटिस प्राप्त करने का मौका मिलेगा। मेले में लगभग 05 कंपनियां प्रतिभाग कर रही हैं। आईटीआई उत्तीर्ण अभ्यर्थी अपने समस्त मूल प्रमाण पत्र एवं छाया प्रति के साथ समय 10:00 बजे संस्थान परिसर में उपस्थित हो। अभ्यर्थियों का एनएपीएस पोर्टल पर पंजीकरण होना अनिवार्य है। यह सूचना संस्थान के प्रधानाचार्य एसके श्रीवास्तव ने दी है।

पिकअप पेड़ से टकरा कर खाई में गिरी गोलियर के सुमित सेंगर मौत,दो घायल

अखंड भारत संदेश

लालापुर। क्षेत्र के मोबाइल टॉवरों में डीजल डालकर लौट रही एक पिक अप बेकाबू होकर पेड़ से टकरा कर खाई में कूद गई । जिससे उसमें सवार एक युवक की मौके पर मौत हो गई तो दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए । मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा और दोनो घायलों को अस्पताल भेजा।

एमपी के ग्वालियर जनपद के थाना हाजिरा क्षेत्र चारशेर निवासी सुमित सेंगर 19 पुत्र चंद्रपाल सिंह लालापुर क्षेत्र के रिलायंसजिओ मोबाइल टॉवरों पर पिकअप से जा जाकर डीजल की आपूर्ति किया करता था । रोज की तरह मंगलवार के दिन भी लालापुर क्षेत्र में डीजल लेकर गोलइहा टॉवर में डीजल पहुंचा कर लौट रहा था । पिकअप चालक वीरेंद्र सिंह पुत्र भोले सिंह निवासी भिंड से अचानक पिकअप बेकाबू हो गई और पेड़ से टकराने के बाद पिकअप खाई में कूद गई । जिससे वीरेंद्र व मोनू भदौरिया बुरी तरह से घायल हो गए वही सुमित की मौके पर ही मौत हो गई । घटना की सूचना पर पहुंची लालापुर पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और दोनो घायलों को अस्पताल भेजा है।

इस्लाम इंसानियत की दावत देता है और हर गलत कार्यों से रोकता हैः मौलाना बेलाल

ऐतिहासिक लदाव कोठी पर हुआ एक दिवसीय जलसा, मस्जिद फतेह उल्ला की रखी गई बुनियाद

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। इस्लाम हर गलत कार्यों को सख्ती से रोका है। आज का युवा वर्ग नशा का आदी होता जा रहा है। मोबाइलों का गलत प्रयोग करके पूरी इंसानियत को शर्मसार कर रहा है। उक्त बातें मुख्य अतिथि के रूप में आए मौलाना सैयद बेलाल अब्दुल हई हुसनी नदवी साहब जनरल सिक्रेट्री आल इंडिया पैयामे इंसानियत फोरम ने कही।

मऊआइमा के ऐतिहासिक लदाव कोठी पर एकत्रित भीड से मौलाना सैयद बेलाल ने कहा कि मुसलमानों के नाम से लोग नफरत करते हैं। इसकी वजह मुसलमान पाक रसूल के बताए हुए रास्ते से भटक गए हैं। । मौलाना ने कहा कि मुसलमान पाक रसूल के बताये हुए मार्ग पर चलें और झूठ ,जुआ ,शराब ,ब्याज हर गलत कर्यो आदि को छोड दे। वरना बर्बाद हो जाएगा। मौलाना बेलाल ने फरमाया कि अब भी समय है । पाक रसूल के बताए हुए रास्ते पर चलें और गरीब असहायों, पडोसियों का मदद कर इंसानियत देखाएं। तथा पाक रसूल और शहाबा के बारे में जानें। मौलाना ने कहा कि प्यार मोहब्बत नमाज ,रोजा, जकात आदि के अलावा कमजोरों की मददगार बन कर एक अच्छे इंसान की तरह लोगों की मदद करें। उन्होंने पैगामे इंसानियत पर बहुत जोर दिए । मौलाना बेलाल ने अन्त में दुआ कराई। एक दिवसीय जलसे की अध्यक्षता मौलाना मुफ्ती हबीबुर्रहमान ने किया। तथा संचालन मौलाना हफीजुल रहमान ,जलसे की शुरूआत बच्चों के नात और कारी मोहम्मद शमामा ने किया।जलसे में मौलाना मुफ्ती अब्दुल बाशित ,वसी उल्ला ,हाफिज मोहम्मद शारिक ,असदुल हक , डाक्टर हाजी मोहम्मद नदीम इंतेखाब ,वारिस मोईन ,नूर उद्दीन सैफी ,अब्दुल बासित ,मोहम्मद अनस ,हाफिज मोहम्मद रिजवान ,मोहम्मद आजाद के अलावा जलसे के आयोजक शेख मोहम्मद उमैर जलाल साहब मौजूद थे। इससे पूर्व मौलाना सैयद बेलाल अब्दुल हई हुसनी नदवी ने कमालाबाद बैरहना स्थित शाही पैलेस के निकट मस्जिद मोहम्मद फतेह उल्ला का नीव रख कर मस्जिद का निर्माण शुरू कराया।

एनसीसी कैंप प्रतिभागियों को वितरित हुआ प्रमाण पत्र

अखंड भारत संदेश

करछना। क्षेत्र के रामपुर स्थित बृज मंगल सिंह इंटर कॉलेज के एनसीसी के बच्चों को विद्यालय परिसर में मंगलवार को कैंप प्रतिभाग प्रमाण पत्र वितरित किया गया। इस दौरान एनसीसी अधिकारी रमेश चंद्र तिवारी और हवलदार शशि राम ने एनसीसी बच्चों की प्रशंसा करते हुए कहा कि 6 यूपी गर्ल्स बटालियन द्वारा संचालित कैंप में 16 यूपी बटालियन के प्रतिभागी इन बच्चों नेअनुशासन और कैंप में आयोजित कार्यक्रमों में प्रतिभाग करते हुए सराहनीय कार्य किया है। बच्चों को प्रभारी प्रधानाचार्य जीतेंद्र कुमार ने प्रमाण पत्र और मेडल देकर सम्मानित किया इस मौके पर विद्यालय के शिक्षक कर्मचारी और बच्चे भी मौजूद रहे।

भाजपा किसान मोर्चा की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

झूंसी। भारतीय जनतापार्टी किसान मोर्चा गंगापार का किसान प्रतिनिधि सम्मेलन मंगलवार को हण्डिया नगर पंचायत के वार्ड संख्या ग्यारह में सकुशल सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डा. क्रांति तिवारी, सोसल मीडिया प्रभारी काशी प्रान्त किसान मोर्चा, मुख्य अतिथि डा. अर्चना शुक्ल मंत्री काशी क्षेत्र भाजपा किसान मोर्चा रहीं। बैठक में भारतीय जनतापार्टी के घोषित उम्मीदवार को नगर पंचायत अध्यक्ष व सभी तेरह वार्डों में अपने सभासद के पक्ष में मतदान कराने पर रणनीति बनाई गई। दौरान नगर पंचायत क्षेत्र के भारी संख्या में किसान मौजूद रहे।

मंदिर से चोरी हुई केबिल को पुलिस ने किया बरामद

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। मंदिर से केबिल चोरी होने के मामले में दर्ज मुकदमे का खुलासा करते हुए फूलपुर पुलिस ने मंगलवार सुबह आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार अभियुक्त के पास से पुलिस ने चोरी के तीन बंडल एल्यूमीनियम तार व स्टेप केबिल तार बरामद कर विधिक कार्रवाई में जुट गई। फूलपुर कोतवाली क्षेत्र के इफको पुलिस चौकी अंतर्गत नरई पुलिया के नजदीक बरहो सेवार का मंदिर है। बीते शुक्रवार की रात मंदिर से केबिल चोरी होने का मुकदमा फूलपुर कोतवाली में दर्ज हुआ था। मंगलवार को वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत इफको चौकी इंचार्ज पंकज भास्कर ने उच्च अधिकारियों के नेतृत्व में मय फोर्स आरोपी विकास सिंह पुत्र बृजबहादुर सिंह निवासी अतनपुर बहरिया को फूलपुर सब्जी मंडी के पास से गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार अभियुक्त के पास से चोरी हुए सामान की बरामदगी कर पुलिस विधिक कार्रवाई में जुटी रही।

प्रयागराज के शिवगढ़ में भी हुआ किसान वृहत मेला का आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। क्षेत्र बैंक आफ बड़ौदा कार्यालय के सौजन्य से शिवगढ़ प्रयागराज में किसान वृहत मेला का आयोजन दिनांक 29 नवंबर 2022 को पूरे प्रयागराज के बैंक ऑफ बड़ौदा की शाखाओं के सहयोग से एक किसान वृहद मेला का आयोजन शिवगढ़ प्रयागराज में किया गया।

जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में बैंक ऑफ बड़ौदा के अंचल प्रमुख महाप्रबंधक श्री बृजेश कुमार सिंह ,क्षेत्रीय कार्यालय प्रयागराज के क्षेत्रीय प्रमुख श्री अरुण कुमार गुप्ता, अग्रणी जिला प्रबंधक प्रयागराज श्री अनिल कुमार सिंह, सहायक अग्रणी जिला प्रबंधक श्री बिलाल अहमद बडौदा, स्वरोजगार विकास संस्थान के निर्देशक श्री आशुतोष श्रीवास्तव ,वित्तीय साक्षरता परामर्श केंद्र के वित्तीय साक्षरता परामर्शदाता श्री रमेश चंद्र सरोज तथा प्रयागराज के विभिन्न शाखाओं के शाखा प्रमुख ,किसान, समूह के कोषाध्यक्ष अध्यक्ष ,ट्रैक्टर की एजेंसी ,विद्यार्थी ,व्यवसायियों ने बढ़-चढ़कर के भाग लिया/ हमारे विशिष्ट अतिथि महाप्रबंधक श्री बृजेश कुमार सिंह अंचल प्रमुख बैंक ऑफ बड़ौदा अंचल कार्यालय लखनऊ का सभी शाखा प्रबंधकों ने स्वागत किया तथा उन्हें बुके देकर के विशेष रूप से सम्मानित किया गया कार्यक्रम का शुभारंभ महाप्रबंधक एवं क्षेत्रीय प्रमुख द्वारा दीप प्रज्वलित करके तथा बैंक के संस्थापक श्री सयाजीराव गायकवाड के चित्र पर माल्यार्पण करके शुभारंभ किया गया/ महाप्रबंधक श्री बृजेश कुमार सिंह को क्षेत्रीय प्रमुख प्रयागराज ने बुके देकर के तथा क्षेत्रीय प्रमुख प्रयागराज को श्री एलडीएम श्री अनिल कुमार सिंह ने बुके देकर के उनका स्वागत किया /किसान मेला का शुभारंभ करते हुए क्षेत्रीय प्रमुख श्री अरुण कुमार गुप्ता ने बैंक ऑफ बड़ौदा प्रयागराज के विभिन्न शाखाओं द्वारा स्वीकृत किसानों व्यवसायियों समूह के ऋण के विषय में जानकारी दिया ,उसके बाद महाप्रबंधक श्री बृजेश कुमार सिंह ने अपने भाषण में सभी किसानों को सभी व्यवसायियों को सभी समूहों को तथा अन्य ऋण के लाभार्थियों को बैंक ऑफ बड़ौदा प्रयागराज द्वारा 350 लाभार्थियों को 14.16 करोड़ रुपए का ऋण स्वीकृत एवं वितरण माननीय श्री महाप्रबंधक श्री बृजेश कुमार सिंह द्वारा कराया गया।

उन्होंने किसान वृहद शिविर में आयोजित इंस्टॉल का भ्रमण किया तथा सभी को सराहा की बैंक ऑफ बड़ौदा आपके दरवाजे पर है जहां भी किसी भी प्रकार की आवश्यकता है बैंक आपके दरवाजे पर उपस्थित मिलेगा, इसी परिपेक्ष में बडौदा स्वरोजगार विकास संस्थान एवं वित्तीय साक्षरता परामर्श केंद्र के द्वारा स्टॉल लगाकर के जो भी अभ्यर्थी प्रशिक्षण प्राप्त हैं अपने घरेलू उत्पाद का तथा स्वयं सहायता समूह द्वारा उत्पादित अगरबत्ती मोमबत्ती आचार मुरब्बा आदि का स्टाल लगाकर के प्रदर्शन किया तथा वित्तीय साक्षरता सलाहकार श्री रमेश चंद्र सरोज ने स्टाल पर विजिट करने वालों को प्रधानमंत्री द्वारा चलाई गई 3 सामाजिक सुरक्षा की स्कीम के विषय में बैनर लगाकर के तथा पंपलेट बांटकर के लोगों को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन सुरक्षा योजना ,अटल पेंशन योजना तथा बैंक ऑफ बड़ौदा के विभिन्न प्रकार के ऋण योजना गोल्ड लोन कार लोन ट्रैक्टर लोन किसान क्रेडिट कार्ड व्यवसायियों के लिए प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना ,ओडीओपी आदि का प्रचार प्रसार किया गया /अंत में बृहद किसान शिविर का समापन बैंक ऑफ बड़ौदा शिवगढ़ शाखा प्रमुख द्वारा सभी को धन्यवाद प्रस्ताव के बाद समारोह का समापन किया गया।

असद अहमद अटल पेंशन योजना में सराहनीय कार्यों के लिए पुरुष्कृत

कौशांबी डीएम और बैंक के अंचल प्रमुख ने किसान ऋण वितरण शिविर में उत्कृष्ट और सराहनीय कार्य के लिए सम्मानित

अखंड भारत संदेश

कोराव/प्रयागराज। बैंक आफ बड़ौदा प्रयागराज क्षेत्रीय कार्यालय भाग दो द्वारा आयोजित किसान ऋण वितरण शिविर में जिलाधिकारी कौशांबी सुजीत कुमार तथा बैंक के अंचल प्रमुख बृजेश कुमार और क्षेत्रीय प्रमुख प्रमोद कुमार ने बैंक आफ बड़ौदा यमुनापार के चार बैंक बीसी क्रमशः असद अहमद सिद्दीकी को अटल पेंशन योजना में सर्वाधिक पंजीकरण आदि कार्य बैंक हितार्थ किए जाने और ,राजकुमार मिश्रा,ओम प्रकाश शुक्ला,अनर सिंह, तथा बैंक मित्र पर्यवेक्षक आशीष तिवारी,रवीश मालवीय,ज्योति यादव, जे एन मौर्य,अरुण सिंह, को प्रशस्ति पत्र एवं उपहार दे कर सम्मानित किया गया इसी प्रकार कार्यक्रम में भारी संख्या में किसानों को कृषि एवं ट्रैक्टर ऋण वितरित किया। उक्त मुख्य अतिथि डीएम तथा कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक आशीष श्रीवास्तव ने संबोधित किया आए हुए बैंक प्रतिनिधियों किसानों की हौंसला आफजाई किया। कार्यक्रम में पवन कुमार एफ आई इंचार्ज प्रयागराज 2 क्षेत्र भी उपस्थित रहे।

फूलपुर पुलिस ने शांतिभंग की आशंका में किया चार का चालान

अखंड भारत संदेश

फूलपुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत थाना क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए फूलपुर पुलिस ने मंगलवार को दो मामलों में चार लोगों का शांतिभंग सहित अन्य धाराओं में चालान कर दिया। पुलिस ने बताया कि थानाक्षेत्र के बर्जीबरा निवासी पारस नाथ व रमेश चौहान के बीच खेत का मेड़ काटने को लेकर विवाद हुआ है। वहीं दूसरे मामले में पुवाल रखने को लेकर सेफखानपुर (नगरिया) निवासी सूबेदार प्रजापति व रमेश प्रजापति आपस में भिड़ गए। जिसपर पुलिस ने दोनों पक्षों का 151, व 107/116 में चालान कर अन्य विधिक कार्रवाई कर रही है।

मोहन भागवत बोले, अध्यात्म के बिना धर्म का अस्तित्व नहीं

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक डॉ. मोहन भागवत मंगलवार को संगमनगरी प्रयागराज में हैं। वह यहां पर ज्योतिष्पीठ के पीठोद्धारक ब्रह्मलीन सरस्वती के 150वें जन्मोत्सव के तहत आयोजित होने वाले आराधना महोत्सव में हिस्सा लेने पहुंचे थे। अलोपीबाग स्थित शंकराचार्य आश्रम में उन्होंने करीब 7 मिनट का संबोधन भी किया।उन्होंने कहा, अध्यात्म के बिना धर्म का कोई अस्तित्व नहीं है।

सभी धर्मों में आचरण का पालन करना बताया गया है। आध्यात्म ही सबको साथ लेकर चलने की प्रेरणा देता है। अभी तक जितने भी महापुरुष हुए हैं। उनका नाम और काम भले ही अलग-अलग रहा हो। लेकिन, सभी के आधार में आध्यात्म अवश्य रहा। ऐसे लोगों के पथ पर हमें कदम बढ़ाना होगा।इसके पूर्व संघ प्रमुख ने आराधना महोत्सव का शुभारंभ

किया। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के सदस्य स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती के संयोजन में आयोजित होने वाला यह कार्यक्रम 8 दिसंबर तक चलेगा।

मनुष्य को आध्यात्म से जुड़ने की जरूरत

संघ प्रमुख ने कहा,मनुष्य को आध्यात्म से जुड़ा रहना होगा। आध्यात्म से हमें उचित मार्गदर्शन मिलता है। अन्यथा मनुष्य भटकने लगता है। उसे अपनी बुद्धि, अपना विचार और अपना कार्य ही श्रेष्ठ लगने लगता है।उन्होंने कहा,संतों और आचार्यों का स्मरण एक साधना है। संघ प्रमुख शाम छह बजे तक शंकराचार्य आश्रम में रहे। इस दौरान यहां प्रवचन का भी कार्यक्रम चलता रहा। भागवत ने करीब आधा दर्जन ऐसे लोगों को सम्मानित भी किया जिन्होंने अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया है। इस दौरान चुंगी से लेकर अलोपबाग मंदिर बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स मुस्तैद रही।

अक्टूबर में 10 दिन प्रवास पर थे मोहन भागवत

दरअसल, डॉ. मोहन भागवत अक्टूबर में 10 दिन के लिए प्रयागराज प्रवास पर थे। वह गौहनिया के वात्सल्य परिसर में स्थित सेठ जयपुरिया स्कूल में आयोजित होने वाले संघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में हिस्सा लेने के लिए आए थे। 12 अक्टूबर से 22 अक्टूबर तक वह यहीं पर प्रवास पर रहे। इसमें देश भर से 300 से ज्यादा संघ के पदाधिकारी भी शामिल थे। इस बार संघ प्रमुख का एक दिन का दौरा है। रात्रि विश्राम वह संघ के कार्यालय पर ही करेंगे। संघ कार्यालय पर सिक्योरिटी बढ़ा दी गई है। दूसरे दिन बुधवार को वह छिवकी रेलवे स्टेशन से संघमित्रा एक्सप्रेस से चंद्रपुर स्टेशन के लिए रवाना हो जाएंगे।

कैबिनेट मंत्री जितिन प्रसाद के जन्मदिवस पर हनुमत निकेतन में कार्यकताओं ने हनुमान चालीसा का किया पाठ

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। सिविल लाइन्स स्थित हनुमान मंदिर में लोक निर्माण विभाग,उत्तर प्रदेश सरकार के कैबिनेट मंत्री जितिन प्रसाद के जन्मदिवस के उपलक्ष में मंदिर प्रांगण में कार्यकताओं द्वारा हनुमान चालीसा का पाठ किया गया इस अवसर पर मन्दिर प्रांगण में काफी कार्यकर्ता मौजूद रहे । तथा 49वें जन्मोत्सव के अवसर पर 49 किलो के लड्डू का भोग भी लगाया गया एवं पवन सुत बजरंग बली से उनके दीर्घायु एवं उनके उज्जवल राजनीतिक भविष्य के लिए कामना किया गया । जिससे कि वे राजनीति के शिखर पर पहुंच सकें तथा उत्तर प्रदेश के आम जन मानस को उनके प्रबल, स्पष्ट एवं निर्भीक विकास परक सोच से उत्तर प्रदेश को नित्य नयी ऊचाई पर ले जायें।कार्यक्रम में प्रमुख रूप से विजय मिश्रा, अविनाश दुबे, सन्दीप मिश्रा, कौशल पाण्डेय, अमित श्रीवास्तव, रामकृष्ण द्विवेदी, हरिकृष्ण द्विवेदी, उमापति त्रिपाठी, कौशल पाण्डेय, अभिषेक द्विवेदी, योग मिश्रा, अमन, ताबिस अहमद, अर्श कुरैशी, राहुल तिवारी, शैलेन्द्र द्विवेदी सहित सैकड़ों की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

माघ मेले की तैयारी तेज, गड़ने लगे बिजली के पोल

अखंड भारत संदेश

झूंसी। माघ मेले का समय जैसे-जैसे नजदीक आ रही है प्रशासन की सक्रियता बढ़ती जा रही है माघ मेला शुरू होने में अभी सवा महीने का समय अभी बाकी है। जमीन पर अभी बहुत काम होना है। सोमवार को माघ मेला सकुशल संपन्न कराने के लिए संत महात्माओं के साथ अफसरों ने गंगा पूजन किया। इस दौरान अफसरों ने सभी विभागों के साथ बैठक कर मेला की तैयारियों को रफ्तार देने पर जोर दिया। बिजली विभाग, सिचाई विभाग, जलनिगम, पीडब्ल्यूडी, स्वस्थ्य विभाग का बहुत काम बाकि है। सभी विभाग माघ मेले की तैयारी में युद्ध स्तर पर लगे है हर तरफ काम चल रहा है। एक तरफ दर्जनों ट्रैक्टर, जेसीबी, मजदूरों को लगा कर समतलीकरण का कार्य कराया जा रहा है तो वहीं दूसरी ओर पीडब्ल्यूडी सड़क, पीपा का पुल बनाने में लगा हुआ है। बिजली विभाग भी तेजी से काम में जुटा हुआ है। मंगलवार को झूंसी को ओर बिजली के पोल गाड़े जा रहे थे। ताकि जल्द से जल्द मेले को रोशन किया जा सके।

महिला ने एम्बुलेंस में ही बच्चे को दिया जन्म

अखंड भारत संदेश

लालापूर। शंकरगढ़ क्षेत्र की एक महिला ने अस्पताल जाते समय एंबुलेंस में ही बच्चे को जन्म दिया महिला को प्रसव पीड़ा होने पर घरवालों ने 108 एंबुलेंस को फोन करके बुलाया फिर मरीज को लेकर सीएचसी शंकरगढ़ जा रहे थे महिला ने रास्ते मे ही बच्चे को जन्म दिया, पूरे भट्ठू निवासी निशा देवी (24) पत्नी राम प्रताप को दिन रविवार को प्रसव पीड़ा शुरू हुई तो निशा के घरवालों ने 108 एंबुलेंस को फोन लगाया करीब 14 मिनट बाद एंबुलेंस निशा के घर पहुंच गयी निशा को एम्बुलेंस से लेकर सीएचसी शंकरगढ़ जा रहे थे घर से कुछ ही दूर निकले थे कि गदामार गांव से पहले ही निशा को प्रसव पीड़ा बहुत बढ़ गई तब 108 एंबुलेंस के ई एम टी अच्युतानन्द और पायलट मनीष कुमार ने रास्ते में ही एंबुलेंस को रोक लिया और अपनी सूझबूझ से काम लेते हुए ई एम टी अच्युतानन्द ने गांव की आशा सुशीला देवी के सहयोग से एंबुलेंस में ही सुरक्षित प्रसव करा दिया तो वहीं निशा ने एक सुंदर पुत्री को जन्म दिया और बाद में जच्चा-बच्चा को सीएचसी शंकरगढ़ में भर्ती कराया गया जहां स्टाफ नर्स ने बताया जच्चा-बच्चा दोनों सुरक्षित है निशा के घर वालों ने एंबुलेंस के स्टाफ एवं एंबुलेंस सेवा की बड़ी सराहना की और बहुत-बहुत धन्यवाद दिया ।

प्रयागराज में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में मिली खामियां, कई प्रभारी चिकित्साधिकारियों पर गाज

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में मंगलवार को संगम सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक हुई। बैठक में अनुपस्थित रहने वाले स्वास्थ्य विभाग के दो (अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी) का वेतन रोकने का जिलाधिकारी ने निर्देश दिया। स्वास्थ्य विभाग के कार्यों में लापरवाही करने वाले चिकित्सा प्रभारियों को भी निर्देशित किया और वेतन रोकने का आदेश दिया। जिलाधिकारी ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं के क्रियान्वयन में किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता स्वीकार्य नहीं है। स्वास्थ्य से संबंधित जो योजनाएं संचालित हैं, उनका अच्छी तरह से क्रियान्वयन करते हुए लोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। जिलाधिकारी ने अस्पतालों में साफ-

सफाई की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने के साथ-साथ नियमित अंतराल पर मेडिकल स्टॉफ का प्रशिक्षण भी कराते रहने के निर्देश दिए हैं।

रात में स्वास्थ्य केंद्र पर मौजूद रहें चिकित्सा अधिकारी : डीएम

जिलाधिकारी ने जेएसवाई, प्रधानमंत्री मातृत्व अभियान योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, परिवार कल्याण कार्यक्रम, नियमित टीकाकरण, आरसीएच पोर्टल पर पंजीकरण एवं अपडेशन के कार्यों की समीक्षा की। अस्पतालों में चल रहे कायाकल्प की स्थिति की जानकारी लेते हुए कहा कि अस्पतालों के कायाकल्प के कार्य को मानक के अनुरूप कराया जाये।

उन्होंने रात्रि के समय अस्पतालों में चिकित्सकों की उपस्थिति के बारे में जानकारी लेते हुए निर्देशित किया कि प्रत्येक सामुदायियक व प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर रात्रि के समय मेडिकल अधिकारी उपस्थित रहें। जिलाधिकारी ने प्रत्येक प्रभारी चिकित्साधिकारियों को कहा कि आप लोगों के पास प्रत्येक कार्यों की चेक लिस्ट होनी चाहिए तथा उसी के अनुरूप गुणात्मक सुधार आना चाहिए। यदि आप अच्छा कार्य करेंगे तो लोगो में एक अलग पहचान के साथ-साथ विश्वास कायम होगा। उन्होंने कहा कि प्रत्येक प्रभारी चिकित्साधिकारियों का प्रबंधन अच्छा होना चाहिए तथा आपके अधीन जो कर्मचारीगण है, उनकी परफार्मेंस पर भी ध्यान देना चाहिए।

बहरिया और सैदाबाद के चिकित्साधिकारी को रोका वेतन

जिलाधिकारी ने कार्यों की समीक्षा करते हुए लापरवाही पाए जाने पर प्रभारी चिकित्साधिकारी बहरिया, सैदाबाद का वेतन रोकने का निर्देश दिया है। प्रभारी चिकित्साधिकारी तेज बहादुर सप्रू (बेली) हॉस्पिटल को सचेत करते हुए कहा कि कोई शिकायत न आए। आरसीएच पोर्टल की स्थिति की समीक्षा करते हुए सभी प्रभारी चिकित्साधिकारियों को अगले बैठक तक प्रगति में सुधार लाने के निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने गर्भवती महिलाओं का शत-प्रतिशत रजिस्ट्रेशन कराए जाने का निर्देश दिया है। उन्होंने बच्चों का शत-प्रतिशत पूर्ण टीकाकरण कराये जाने का भी निर्देश दिया है। जिलाधिकारी ने वीसीजी, डिप्थेरिया, मीजेल्स रूबेला का भी शत-प्रतिशत टीकाकरण कराए जाने के लिए कहा है।

किसान मेला में बीओबी ने वितरित किया करोड़ों का कृषि ऋण

कृषि ऋण पाकर लाभार्थियों के खिले चेहरे

अखंड भारत संदेश

सोरांव। तहसील क्षेत्र के शिवगढ चौराहा स्थित श्यामा गेस्ट हाउस मे हर वर्षों की भांति इस वर्ष भी बैंक ऑफ बड़ौदा शिवगढ़ के जिम्मेदार शाखा प्रबंधक अभिषेक द्विवेदी के देखरेख मे प्रयागराज जनपद के बैंक ऑफ बड़ोदा की सभी शाखाओं के सम्मिलित किसान ऋण गोष्ठी का आयोजन मंगलवार को उक्त गेस्ट हाउस में किया गया। इस मौके पर बतौर मुख्य अतिथि बैंक ऑफ बड़ौदा के अंचल प्रमुख बृजेश कुमार सिंह उपस्थित रहे।

इस मौके पर सैकड़ो किसानो को भारत सरकार व उत्तर प्रदेश सरकार की महत्त्वाकांक्षी योजनाओं के बारे मे क्षेत्रीय प्रमुख अरुण कुमार गुप्ता एवं अंचल प्रमुख द्वारा किसानो को प्रमुखता से जानकारियां भी दिए। मुख्य अतिथि ने मौजूद किसानों को ट्रैक्टर ऋण, गोल्ड ऋण, किसान क्रेडिट कार्ड जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा परिचर्चा किये व सैकड़ो किसानो को 14 करोड़ 61 लाख रुपये कृषि ऋण भी वितरण किया।इस मौके पर जनपद प्रयागराज के बैंक ऑफ बड़ौदा के सभी शाखा प्रबंधक व क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकारी दिव्यलोक, प्राची गौरव उपाध्याय, हेमंत कुमार, प्रयाग जन सेवा केंद्र के संचालक मोहम्मद यूसुफ, राज केशरवानी, राम देव मौर्य, जितेंद्र मौर्य, गन्नू मौर्य, संग सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

गोधना-मीरगंज मार्ग पर ट्रैक्टर, बाइक की आमने-सामने टक्कर में तीन युवक घायल

जंघई। क्षेत्र के गोधना- मीरगंज मार्ग पर देर शाम ट्रैक्टर और बाइक में आमने-सामने टक्कर हो गई जिसमें बाइक सवार तीन युवकों में से दो को गंभीर चोटें आई है जिसे जौनपुर रेफर कर दिया गया। एक युवक का पैर फैक्चर बताया जा रहा है वहीं दूसरे को दवा देकर वापस घर भेज दिया गया था जहां उसकी तबीयत अधिक खराब होने पर परिजन इलाज हेतु जौनपुर ले गए।गोधना बाजार से सब्जी लेकर घर जा रहे शैलेश गुप्ता, सनी सरोज, विक्की यादव एक ही बाइक पर सवार होकर अगहुआ जा रहे थे विपरीत दिशा से आ रही ट्रैक्टर से भीड़ गए जिसमें दो को गंभीर चोट आई है जिसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया जिसमें शैलेश गुप्ता का पैर टूट गया है वहीं सनी सरोज को गंभीर चोटें आई है युवकों द्वारा बताया गया कि सड़क किनारे कुछ लोगों द्वारा अतिक्रमण किए जाने से हम सब अपने बचाव में भाग नहीं सके और ट्रैक्टर ने हमें चपेट में ले लिया।

भारतीय किसान यूनियन ने एसडीएम फूलपुर को सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

सहसों। भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक गंगापार द्वारा शिव मिलन गौतम जिला अध्यक्ष एवं मुन्ना सिंह जिला महामंत्री के नेतृत्व में विभिन्न मांगों को लेकर उप जिलाधिकारी फूलपुर को मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश शासन के नाम ज्ञापन सौंपा गया। थरवई थाना क्षेत्र के टटिहरा रुदापुर गांव स्थित स्वर्गीय जनार्दन प्रसाद मिश्रा स्मृति द्वार के सामने जौनपुर प्रयागराज राजमार्ग पर मंगलवार को भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक गंगापार द्वारा किसानों के प्रति हो रहे अन्याय एवं भ्रष्टाचार के खिलाफ किसान नेताओं ने पंचायत लगाकर उत्तर प्रदेश सरकार के खिलाफ पीड़ित मजदूरों एवं किसानों पर हो रहे अन्याय के खिलाफ किसान नेताओं द्वारा कार्यकताओं को संबोधित करते हुए एसडीएम फूलपुर को 8 सूत्रीय ज्ञापन सौंपते हुए कहा जनपद में ग्रामीण अंचलों में खाद एवं बीज में अनियमितता का जांच कर दोषियों को जेल भेजा जाए, देश व प्रदेश में आवारा पशुओं को पकड़ कर बने बाड़े में डाला जाए जिससे किसानों का खेती बच सके, इफ्को से लेकर बैरगिया तक पानी बहाव के लिए नाला खुदवाया जाए, इफ्को में दैनिक मजदूरों में प्रतिशत के हिसाब से गरीब किसान बच्चों को भी रखा जाए, इफको फूलपुर से निकलने वाला जहरीला गंदा पानी की व्यवस्था किया जाए, इफ्को में दैनिक मजदूरों का भी कम से कम 50 लाख का बीमा किया जाए, इफ्को फूलपुर में क्षेत्रीय विधायक व सांसद का रिजर्व कोटा में हैंडपंप कंबल आदि सहित यूरिया खाद बेचने हेतु मुफ्त लाइसेंस प्रदान किया जाए एवं किसान नेताओं द्वारा उपजिलाधिकारी फूलपुर से क्रमवार जांच कराकर किसानों को न्याय दिलाया जाए। किसान पंचायत को संबोधित करने वालों में राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेश सिंह चौहान, मंडल अध्यक्ष बबलू दुबे, सनी शुक्ला, मुन्ना सिंह, जगदीश नारायण तिवारी, अमित जी, नीरज प्रजापति, रमेश तिवारी, सुरेंद्र यादव, राम जतन पाल, अमरनाथ यादव आदि ने अपने अपने विचार रखे। इस अवसर पर भारतीय किसान यूनियन के जनपद के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता तथा ग्रामीण किसान उपस्थित रहे।

सांसद के गनर भाजपा नेता को बदमाशों ने मकान के छत पर रात सोते समय मारी गोली

अखंड भारत संदेश

करछना। प्रयागराज थाना क्षेत्र के धरवारा मजरा हनुमानपुर में सोमवार रात अज्ञात बदमाशों ने मकान के छत पर सो रहे भाजपा नेता एवं फूलपुर की सांसद केशरी देवी का पूर्व गनर प्रमोद दुबे को

गोली मार दी घटना की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने घायल को करछना सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र इलाज हेतु ले गए जिसे डॉक्टरों ने जिला अस्पताल रेफर कर दिया घटना के बाद हमलावर फरार हो गए बताया जाता है कि गांव निवासी प्रमोद कुमार दुबे 40 वर्ष सोमवार रात अपने नवनिर्मित मकान के छत पर सो रहा था करीब सोमवार रात तीन बजे के आस पास अज्ञात बदमाशों ने सोते समय गोली मार कर फरार हो गए गोली उसके सर और कंधे पर गोली लगी परिजनों के अनुसार गोली की फायरिंग सुनकर मौके पर पहुंचे तो प्रमोद दुबे लहूलुहान हालत में था, जो गोली लगने से जलन से घायल हालत में कराह रहा था, गोली की आवाज सुनकर बगल में सोऐ चारपाई पर प्रमोद दुबे का भाई ने गोली की आवाज सुनकर जागा और देखा तो परिजनों को जानकारी दी सूत्रों के मुताबिक प्रमोद दुबे सांसद केसरी देवी पटेल का गनर रह चुका है,वह इस समय गांव अपने मकान बनवा रहा था, और कुछ जमीनी विवाद का मामला सामने आया है लेकिन इस मामले में किसी को नामजद नहीं किया गया है, थाना अध्यक्ष करछना विश्वजीत सिंह ने बताया कि गोली से घायल युवक के शरीर में गोली घूसी नहीं है उसका इलाज चल रहा है और अज्ञात अपराधियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कल लिया गया है जांच के बाद स्पष्ट हो पाएगा कि मामला क्या है, और घर के बाहर हिस्से में सीसीटीवी कैमरे लगा है पुलिस फूटेज निकाल कर मामले की जांच करने में जुटी है।

तीन अलग अलग गांवों में मार पीट कई घायल आधा दर्जन के खिलाफ मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। मऊआइमा में तीन अलग अलग गांवों में मार पीट के दौरान कई जख्मी हुये है। पुलिस ने तीनों मामलों में आधा दर्जन के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम परमानंदपुर निवासनीय मंजू देवी पत्नी रविशंकर का आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर उसके घर में घुस कर मारा पीटा गया। मंजू देवी ने मऊआइमा थाने में तारा देवी और सीतारा देवी के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है। उधर ग्राम नगईपुर कहली निवासी उधम सिंह पुत्र वीरेंद्र सिंह का आरोप है कि उसके शादी के घर में कतिपय बारातियों ने उत्पात मचाने लगे मना करने पर उसे लाठी डंडे और राड से मार पीट कर जख्मी कर दिए। उधम सिंह ने सुभाष गिरी ,आकाश गिरी ,दाऊ तथा अन्य अज्ञातों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है। उधर ग्राम छाता कलीपुर में हुई मार पीट में दूसरे पक्ष की लालती देवी पत्नी सोनू ने सुरेन्द्र कुमार और जंगाली के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

उद्यमियों एवं व्यापारियों की समस्याओं का प्राथमिकता पर हो निस्तारणः सीडीओ

मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में जिला उद्योग बन्धु की बैठक सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया की अध्यक्षता में विकास भवन के कक्ष में जिला उद्योग बन्धु की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में ऋण योजनाओं प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, एक जनपद एक उत्पाद योजना की समीक्षा करते हुये मुख्य विकास अधिकारी ने खादी ग्रामोद्योग एवं उपायुक्त उद्योग विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि लाभार्थियों के ऋण पत्रावलियों की कागजात की गहनता से जांच करें और यदि कोई कमी दिखे तो लाभार्थी को सूचित कर ऋण पत्रावली दुरूस्त कराकर सम्बन्धित बैंकों को आवेदन पत्र प्रेषित करें जिससे योजना का लाभ लाभार्थियों को प्राप्त हो सके।

जिला उद्योग बंधु की बैठक में बोलतीं सीडीओ ईशा प्रिया।

उन्होंने बैंकों के जिला समन्वयक को निर्देशित किया कि लाभार्थियों के ऋण पत्रावलियों को स्वीकृत करते हुये ऋण वितरण की कार्यवाही सुनिश्चित करें इसमें लापरवाही कदापि न बरती जाये। अनुराग खण्डेलवाल सचिव चेम्बर ऑफ इण्डस्ट्रीज वेलफेयर सोसाइटी के आवेदन पत्र द्वारा औद्योगिक आस्थान सुखपालनगर के दाहिने गेट पर स्थानीय ग्रामवासियों द्वारा गोवर डम्पिंग प्वाइन्ट बना देने से मार्ग अवरूद्ध होने के साथ-साथ गन्दगी के प्रकरण को संज्ञान में लेते हुये मुख्य विकास अधिकारी ने जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देशित किया कि प्रकरण का जल्द से जल्द निस्तारण करायें। इसी प्रकार चेम्बर ऑफ इण्डस्ट्रीज वेलफेयर सोसाइटी के अनुराग खण्डेलवाल के आवेदन पत्र द्वारा औद्योगिक आस्थान सुखपालनगर में उद्यमियों को आग से बचाने हेतु 04 फायर हाइड्रेन्ट लगाये गये थे किन्तु उनका समुचित रख-रखाव व टेस्टिंग न होने के कारण निष्प्रोज्य पड़े है को चालू करवाने के प्रकरण पर मुख्य विकास अधिकारी ने अग्निशमन अधिकारी के प्रतिनिधि एवं ईओ नगर पालिका मुदित सिंह को निर्देशित किया कि आपस में समन्वय स्थापित कर फायर हाइड्रेन्ट को चालू करायें। अन्त में मुख्य विकास अधिकारी ने सम्बन्धित अधिकारियों एवं बैंको के जिला समन्वयक को निर्देशित किया कि उद्यमियों एवं व्यापारियों की समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण करायें तथा ऋण पत्रावलियों पर आवश्यक कार्यवाही करते हुये लाभार्थियों को योजना से लाभान्वित करें इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही एवं उदासीनता कदापि न बरती जाये। बैठक में जिला अग्रणी बैंक प्रबन्धक, बैंकों के जिला समन्वयक सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी व उद्यमियों/व्यापर मण्डल की ओर से मो0 अनाम, रोशन लाल ऊमरवैश्य, चन्द्र प्रकाश शुक्ला, अनुराग खण्डेलवाल सहित अन्य सम्बन्धित उपस्थित रहे।

विस्तारित क्षेत्र में हुए जलजमाव को नगर पालिका ने किया साफ

सक्सन मषीन लगाकर दो स्थानों पर निकाला गया पानी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर पालिका के विस्तारित क्षेत्रों में नाले-नालियां टूटी हुई है। इससे जगह-जगह जलभराव हो रहा है। इसकी सूचना मिलने पर नगर पालिका अध्यक्षा प्रेमलता सिंह व ईओ मुदित सिंह ने विस्तारित क्षेत्र में हुए जलभराव को तुरंत हटाने का निर्देष जारी किया जिसके तहत मंगलवार को देवकली में दो स्थानों पर हुए जलभराव को सक्सन मषीन लगाकर साफ किया गया।

यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि विस्तारित क्षेत्र देवकली में भी नाले-नालियों की समुचित व्यवस्था नहीं है। जो नाले-नालियां हैं, वह भी टूटी हुई है। इससे जलभराव हुआ है। देवकली के दोनों स्थानों पर आज सक्षन मषीन लगाकर पानी निकाला गया और उसे नाले में डाला गया। बताया जाता है कि अधिषाषी अधिकारी मुदित सिंह ने यहां

जलभराव की समस्या देखी थी जिसके बाद आज नगर पालिका की टीम मषीन लेकर पहुंची और देवकली के दोनों स्थानों पर हुए जलभराव को हटाया गया। इस बारे में ईओ मुदित सिंह ने बताया कि विस्तारित क्षेत्रों में नाले-नालियों के विकास के लिये शासन को प्रस्ताव भेजा गया है। धन मिलते ही विस्तारित क्षेत्र में नाले-नालियों का निर्माण कराकर जल निकासी की व्यवस्था को सुनिष्चित किया जाएगा तो जलजमाव की समस्या स्वतः समाप्त हो जाएगी।

मानधाता क्षेत्र के दो घरों में लाखों की हुई चोरी

प्रतापगढ़। जिले के कोतवाली मान्धाता क्षेत्र के अकारीपुर भगवतगंज में मोहम्मद जावेद व रोहित सिंह दो घरों से बीती रात लगभग सोने व जेवरात सहित सात लाख की चोरी की गई। सुबह परिजनों को जानकारी हुई तो उनके होष उड़ गये। परिजनों ने पुलिस को तहरीर दी जिस पर पुलिस मामले की छानबीन कर रही है। बता दें कि पिछले कुछ वर्ष पहले हरखपुर में इसी तरह चोरी हुई थी।

अधिवक्ता पर जानलेवा हमले का एक और आरोपी गिरफ्तार

एडीजी की फटकार पर हरकत मे आयी कोतवाली पुलिस, वकीलों मे आक्रोश बरकरार

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। संयुक्त अधिवक्ता संघ लालगंज के महामंत्री समेत दो अधिवक्ताओं पर हुए जानलेवा हमले की घटना में पुलिस ने एक और आरोपित को गिरफ्तार कर मंगलवार को जेल भेज दिया। मामले मे पुलिस फरार चल रहे दो शेष आरोपियो की तलाश मे जुटी है।

संयुक्त अधिवक्ता संघ के महामंत्री शेष तिवारी व अधिवक्ता कुलदीप तिवारी बीते सत्रह नंवबर की शाम नौढ़िया से अपनी कार से घर लौट रहे थे। लालगंज के रायगढ़ गांव के पास उन पर रायगढ़ निवासी प्रधान बृजलाल सरोज उर्फ पिंटू, राजेन्द्र, जमुना व देशराज ने जानलेवा हमला बोलकर घायल कर दिया था। आरोपियो ने अधिवक्ता शेष तिवारी का मोबाइल व बीस हजार रुपए लूट लिया था तथा उनकी कार को क्षतिग्रस्त कर दिया था। मामले मे पुलिस प्रधान बृजलाल सरोज को गिरफ्तार कर पहले ही जेल भेज चुकी है। कोतवाल कमलेश पाल ने बताया कि आरोपी देशराज पाल पुत्र सुखदेव को मंगलवार को दरोगा निकेत भारद्वाज ने चुर्री चैराहा से गिरफ्तार किया। आरोपी को जेल भेज दिया गया है। अन्य दोनों आरोपियो की तलाश की जा रही है, शीघ्र ही उन्हें गिरफ्तार कर जेल भेजा जाएगा। अधिवक्ताओं पर कातिलाने हमले को लेकर रविवार की रात लालगंज कोतवाली पहुंचे एडीजी प्रयागराज प्रेमप्रकाश से भी मिलकर रूरल बार के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल व संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश ने कार्रवाई की मांग की थी। इस पर एडीजी ने सीओ तथा कोतवाल को फटकार लगाते हुए आरोपियो के खिलाफ कडी कार्रवाई के निर्देश भी दिये थे। एडीजी की फटकार का असर हुआ कि पुलिस ने आननफानन मे एक और आरोपी को धर दबोचा। वहीं मामले को लेकर लालगंज पुलिस ने अन्य दो आरोपियो की गिरफ्तारी के लिए वकीलों से सप्ताह भर का समय मांगा है। हालांकि शेष दो आरोपियो के अभी भी फरार होने तथा आरोपियो पर गैगेस्टर नही लगाए जाने को लेकर वकीलों में मंगलवार को भी यहां असंतोष का माहौल दिखा। संध के पदाधिकारियों को रणनीतिक बैठक कर प्रकरण को लेकर मंथन भी करते भी देखा गया।

प्लेटफार्म पर गिरने से घुटना जख्मी, जीआरपी ने भेजा अस्पताल

प्रतापगढ़। चलती ट्रेन पकड़ने के चक्कर में एक यात्री प्लेटफार्म पर गिर गया। इससे उसके पैर में काफी चोट आई। जीआरपी ने उसे एंबुलेंस की मदद से इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया है। पुलिस ने घटना की सूचना उसके परिजनों को भेज दी है। जानकारी के अनुसार लखनऊ जाने वाली जनता एक्सप्रेस प्लेटफार्म एक से छूट गई थी। उसी समय पीछे से भागता हुआ एक यात्री उसको पकड़ने के चक्कर में लड़खड़ा गया और प्लेटफार्म पर गिर पड़ा। इससे उसके घुटने छिल गए। सूचना मिलने पर जीआरपी ने तत्परता दिखाई। गंभीर रूप से घायल यात्री को एंबुलेंस की मदद से। इलाज के लिए अस्पताल भेजा। एसओ मोहम्मद राशिद खान ने बताया है कि ट्रेन नंबर 14265 जनता एक्सप्रेस से एक यात्री त्रिभुवन दुबे पुत्र देवनारायण दुबे उम्र (50) वर्ष निवासी फेनहा थाना कंधई जनपद ट्रेन से गिर जाने के कारण गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें तत्काल 108 नंबर एंबुलेंस बुलाकर जिला अस्पताल रवाना किया गया।

समाज में युवाओं के विकास के लिये तकनीकी शिक्षा सहायक

पीबीपीजी कालेज में छात्र-छात्राओं को वितरित किया गया स्मार्ट फोन व टैबलेट

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। प्रताप बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय प्रतापगढ़ सिटी के सभागार में स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के तहत टैबलेट/स्मार्ट फोन वितरण का आयोजन प्राचार्य प्रो0 अमित कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ सदर विधायक राजेन्द्र मौर्य ने किया।

इस दौरान सदर विधायक ने कहा कि प्रदेष सरकार युवाओं के चतुर्दिक विकास की संकल्पना को साकार करने के लिये प्रयासरत है। समाज में तकनीकी शिक्षा एवं जागरुकता नितांत आवष्यक है जिसके लिये यह योजना युवाओं के सर्वांगीण विकास में सहायक होगी।प्राचार्य ने कहा कि युवाओं के प्रति प्रदेष सरकार की यह योजना मील का पत्थर साबित होगी। नई षिक्षा नीति के तहत तकनीकी

षिक्षा को बढ़ावा देने के लिये हर हाथ में यह उपकरण एक सराहनीय प्रयास है। कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के जनसूचनाधिकारी डा0 धर्मेन्द्र प्रताप सिंह ने किया। इस मौके पर नोडल अधिकारी प्रो0 ब्रहमानंद प्रताप सिंह, पूर्व प्राचार्य प्रो0 बृजभानु सिंह, मुख्य नियंता डा0 राजीव कुमार सिंह, डा0 के0के0 सिंह, डा0 सीपी पाण्डेय, डा0 निहारिका श्रीवास्तव, नीरज पाण्डेय, अजीत प्रताप सिंह, डा0 अखिलेष मोदनवाल, आषुतोष श्रीवास्तव, समित सिंह, सहदेव सिंह, संतोष सिंह, बालेन्दु भूषण सिंह, धीरेन्द्र प्रताप सिंह, विनोद कुमार मौर्य, विनय कुमार सिंह, संदीप कुमार मौर्य, संकल्प कुमार सिंह, नन्हे मौर्य आदि मौजूद रहे।

टैबलेट पाकर खिल उठे स्नातकोत्तर छात्र छात्राओ के चेहरे

एमएलसी ने सफलता के दिये टिप्स

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। नगर के हेमवती नंदन बहुगुणा पीजी कालेज में मंगलवार को स्नातकोत्तर छात्र छात्राओं के चेहरे टैबलेट पाकर खिल उठे। स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तीकरण के तहत सरकार द्वारा पीजी छात्र छात्राओं को निशुल्क टैबलेट का वितरण शिक्षक विधायक उमेश द्विवेदी ने बतौर मुख्यअतिथि किया। इसके पूर्व समारोह का शुभारंभ शिक्षक विधायक उमेश द्विवेदी तथा महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष डा. वीरेन्द्र मिश्र ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। महाविद्यालय की छात्रा कंचन व अंजली ने स्वागत गान तथा सरस्वती आराधना से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। बतौर मुख्यअतिथि एमएलसी उमेश द्विवेदी ने कहा कि जीवन मे सफलता का एक मात्र आधार युवा वर्ग को लगातार कठिन मेहनत के प्रति समर्पित रखने मे ही निहित है। उन्होनें कहा कि नये युग में ज्ञान का भण्डारण भी वृहद होना आवश्यक है। एमएलसी उमेश द्विवेदी

समारोह को संबोधित करते एमएलसी उमेश द्विवेदी।

ने कहा कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में छात्र छात्राओं को टैबलेट के जरिए राष्ट्रीय एवं अर्न्तराष्ट्रीय ताजा घटनाक्रमों के साथ विषय की विशेषज्ञता का भी ज्ञानार्जन हो सकेगा। कार्यक्रम को विशिष्ट अतिथि के रूप मे संबोधित करते हुए पूर्व प्राचार्य डा. दुर्गा प्रसाद ओझा ने भी शिक्षा के परिवेश को सृदढ बनाने के लिए मेधावियो को अध्ययन के प्रति गहरी अभिरूचि जागृत करनी चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष डा. वीरेन्द्र मिश्र व संचालन डा. वाचस्पति मिश्र ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के एमए उत्तरार्द्ध उत्तीर्ण हुए तिहत्तर छात्र छात्राओं को टैबलेट वितरित किया गया। समारोह को तहसीलदार धीरेन्द्र प्रताप सिंह, प्रभारी निरीक्षक कमलेश पाल, चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, पूर्व प्राचार्य डा. राजेन्द्र मिश्र, प्रधानाचार्य सुनील शुक्ल ने भी संबोधित किया। इस मौके पर संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश, डा. ऋचासुकुमार, डा. फणीन्द्र नारायण मिश्र, डा. गंगाधर मिश्र, बृजेश द्विवेदी आदि रहे।

मारपीट व तोडफोड की घटना में चार के खिलाफ केस

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने मारपीट व तोडफोड की घटना को लेकर चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के जैनपुर गांव निवासी पवन कोरी पुत्र शंभू प्रसाद ने पुलिस को दी गई तहरीर मे आरोप लगाया है कि बीती आठ नवंबर की शाम करीब छः बजे रंजिश के चलते गांव के विजय कुमार उर्फ खटूसे पुत्र हेमराज व विजय कुमार की पत्नी गीता कोरी तथा धर्मराज कोरी पुत्र रमेशर व धर्मराज की पत्नी ने लाठी डंडा से उसे मारापीटा। उसकी साइकिल को क्षतिग्रस्त कर दिया। आरोपियो ने पीडित से गालीगलौज करते हुए जान से मारने की धमकी भी दी। मामले मे पुलिस ने विजय कुमार उर्फ खटूसे समेत चार लोगों के खिलाफ मारपीट व धमकी तथा तोडफोड का मुकदमा सोमवार की रात दर्ज किया है।

मधुमक्खी पालन से रोजगार के साथ फसल उत्पादन में होगी बढ़ोत्तरी

मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। किसानों की उपज बढ़ाने के साथ ही साथ उनको रोजगार मुहैया कराने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा पॉच दिवसीय व्यावसायिक मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण का आयोजन मंगलवार को प्रारम्भ हुआ जिसमें जनपद के 30 किसानों को चयनित किया गया। प्रशिक्षण से पूर्व ज्ञान के आकलन हेतु परीक्षा आयोजित की गयी।

इस अवसर पर केन्द्र के वैज्ञानिक डा0 नवीन कुमार सिंह ने बताया कि मधुमक्खी पालन एक ऐसा व्यवसाय है जो कृषि व बागवानी उत्पादन बढ़ाने की क्षमता भी रखता है। शहद एवं मोम के अतिरिक्त अन्य पदार्थ जैसे गोंद, प्रोपोलिस, रायल जेली भी प्राप्त होते है। साथ ही मधुमक्खियों से फूलों में परागण होने के कारण फसलों की उपज में लगभग एक चैथाई अतिरिक्त बढ़ोतरी भी होती है। इस प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षण आयोजक प्रसार वैज्ञानिक डा0 अवधेश सिंह एवं अन्य वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को कुशलता पूर्वक पाली जाने वाली मधुमक्खी की प्रजाति एपिस मेलीफेरा मधुमक्खियों की वंश बृद्धि एवं उनके कार्य के सम्बन्ध में विस्तार बताया जायेगा। प्रशिक्षण के दौरान मधुमक्खियों को हानि पहुँचाने वाले वाले प्रमुख कीडे एवं उनमें लगने वाली बीमारियों को विस्तृत रूप से समझाया जायेगा तथा मौन पालन में प्रयोग होने वाले हर तरह के उपकरण एवं यंत्रों को भी दिखाया जायेगा जिससे किसान को मौन पालन में किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े। मधुमक्खी पालन से सम्बन्धित सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी जायेगी जिससे किसान सफल मधुमक्खी पालक बन सकेंगे।

खण्डहर में तब्दील हुआ कालाकांकर रोडवेज बस स्टेशन

प्रतापगढ़। कालाकांकर को करीब पांच दशक पहले 1970 में रोडवेज बस स्टेशन की सौगात मिली थी बृजेश अस्पताल के सामने स्थित बस स्टेशन परिसर में बड़ा सा कार्यालय विश्रामालय टिकट घर पूछताछ केंद्र आदि बनाए गए थे यहां से करीब दो दर्जन बसें दिल्ली कानपुर वाराणसी इलाहाबाद प्रतापगढ़ चित्रकूट फैजाबाद सहित महानगरों के लिए संचालित की जाती थी। इससे काला कहकर क्षेत्र से जुड़े करीब 200 गांव के लोगों को सहूलियत थी बस स्टेशन पर सुबह शाम यात्रियों का आना जाना लगा रहता था मगर जनप्रतिनिधियों एवं विभागीय उपेक्षा की वजह से महज कुछ वर्षों में बस स्टेशन का अस्तित्व मिट गया बस स्टेशन अराजक तत्व काअड्डा बन चुका है बसों का संचालन पूरी तरह से ठप हो गया है लगभग दो दर्जन बसों के सापेक्ष महज एक बस ही संचालित हो रही है वह भी मनमाफिक ना तो कोई समय सारणी है ना कोई निश्चित स्थान है एक बस में एक मुख्यालय प्रतापगढ़ जाती है और रात विश्राम आलापुर में ही ड्राइवर कंडक्टर करते हैं।

वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

परियावां, प्रतापगढ़। कानून व्यवस्था का कड़ाई से पालन करते हुए जनपद के थाना महेशगंज के उप निरीक्षक अनुपम त्रिपाठी मय हमराह द्वारा देखभाल क्षेत्र/चेकिंग के दौरान मुखबिर की सूचना पर मु0नं0 23/2020 धारा 457, 380, 411 भादवि से संबंधित फरार चल रहे वारण्टी अभियुक्त सूर्यनारायण गुप्ता पुत्र राम गरीब गुप्ता निवासी ऐमापुर बिंधन थाना महेशगंज को उसके घर से गिरफ्तार कर लिखा पढ़ी करके न्यायालय भेजा। पुलिस की धर पकड़ से अपराधियो में हड़कम्प मचा हुआ है।

ट्रेंन की चपेट में आये युवक की मौत

परियावां, प्रतापगढ़। कुंडा कोतवाली के पनाहनगर मिया का पुरवा निवासी मुरतलाल पटेल पुत्र स्व0 बृजलाल पटेल मंगलवार की सुबह लगभग 10 बजे घर के समीप रेलवे ट्रैक पर फसी ऑटो को देखकर उसे धक्का देकर बाहर निकालते समय चंडीगढ़ से प्रयागराज को जा रही ऊँचाहार एक्सप्रेस ट्रेन की चपेट में आ गया जिससे मूरत लाल की मौके पर मौत हो गयी।

भगवत प्राप्ति के लिए संस्कार युक्त जीवन ही हुआ करता है सदमार्गः आचार्य योगेश

बारी भौजमें भागवत कथा में श्रीकृष्ण रूक्मिणी विवाह पर श्रद्धालुओं ने की पुष्प वर्षा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्र के बरीबोझ गांव में हो रही श्रीमदभागवत कथा के छठवें दिन भगवान श्रीकृष्ण व रूक्मिणी विवाह पर कथाश्रवण को आये श्रद्धालुओं को फूलों की वर्षा कर हरे कृष्ण हरे राधे के संकीर्तन से माहौल को आध्यात्मिक रसधार देते दिखे। वहीं कथाव्यास करपात्री धाम के व्याकरणाचार्य आचार्य योगेश जी महराज ने कहा कि आस्था व विश्वास भगवत प्राप्ति के लिए आवश्यक है। उन्होने कहा कि भगवत प्राप्ति के लिए मनुष्य को अपने संस्कार के प्रति सदैव सजग रहना चाहिए। उन्होने कहा कि जो व्यक्ति संस्कार युक्त जीवन जीता है वह कभी भी कष्ट नही पा सकता। आचार्य योगेश जी ने कहा कि ज्ञान के अंधकार को दूर कर समाज में सुचिता का दीपक प्रकाशमान बनाना चाहिए। उन्होने कहा कि अज्ञानता जीवन का भटकाव है और अज्ञान के चैदह स्थलों के सूचकांक को मन में ध्यान रखते हुए सदैव कर्म की सदाचारिता के प्रति समर्पित रहना चाहिए। उन्होने कहा कि जीवात्मा और परमात्मा का मिलन तभी संभव है जब जीव बिना किसी प्रतिफल की कामना के परमात्मा के प्रति लीन रहे। आचार्य योगेश जी ने भागवत महात्म्य को कलियुग के लिए नीतिपथ का सबसे सुरक्षित मार्ग भी ठहराया। कथा के संयोजक पं. जगतपाल तिवारी तथा शिवकली देवी ने कथाव्यास का आयोजन समिति की ओर से सारस्वत सम्मान किया। सह संयोजक समाजसेवी धर्मेन्द्र तिवारी पप्पू व अधिवक्ता दीपेन्द्र तिवारी ने मंगलाआरती का भव्य प्रबंधन करते दिखे। कथाश्रवण के लिए क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना के प्रतिनिधि भगवती प्रसाद तिवारी ने भी पहुंचकर व्यासपीठ का श्रीअभिषेक किया। इस मौके पर ब्लाक प्रमुख इं. अमित प्रताप सिंह पंकज, केडी मिश्र, अनिल त्रिपाठी महेश, हृदय नारायण मिश्र, विनय शुक्ल, रामचंद्र तिवारी, सुमन तिवारी, छोटे लाल मिश्र, आचार्य रामअवधेश मिश्र, उधम सिंह, विकास मिश्र, श्रीकांत मिश्र, केशवदत्त पाण्डेय, मुरलीधर तिवारी, कुंवर ज्ञानेन्द्र सिंह, संतोष तिवारी,

भरभरा कर गिरी मकान की छत मजदूर की दबकर मौत

मकान के मलबे में दबे मजदूरों को निकालने के बजाय घटनास्थल से फरार हुआ मकान मालिक

अखंड भारत संदेश

टेढ़ीमोड़/ कौशांबी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के अंतर्गत गुलामीपुर में एक जर्जर मकान की छत तोड़ते वक्त पूरी छत भरभरा कर गिर पड़ी है जिससे मकान तोड़ रहा मजदूर मकान के मलबे में दब गया है पूरी रात मजदूर मलबे में दबा रहा जिससे तड़प तड़प कर मजदूर की दर्दनाक मौत हो गई है घटनास्थल पर मौजूद मकान मालिक मलवा गिरते ही मौके से फरार हो गया है मजदूर के घर वापस ना पहुंचने परिजन उसकी खोजबीन करते रहे लेकिन कहीं नहीं पता चला तब

मजदूर की मौत के बाद घटनास्थल पर जुटी भीड़।

दूसरे दिन सुबह मंगलवार को जब ग्रामीणों के साथ परिजनों ने मलबे में देखा तो मजदूर दबा था हादसे की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर कोहराम मच गया घटनास्थल पर ग्रामीणों का मजमा लगा हुआ है। जानकारी के मुताबिक ललिता देवी मंदिर मीरापुर इलाहाबाद के रहने वाले निरंजन सरोज उम्र 30 वर्ष पुत्र रामसुरेमन बिगत कई वर्षों से अपने ननिहाल गुलामीपुर मे अपनी पत्नी के साथ मिट्टी के घर मे छप्पर डालकर रह रहे है गुलामीपुर के रहने वाले सुरेंद्र कुमार पुत्र अयोध्या प्रसाद प्रजापति घर की जर्जर छत तोड़ने के लिए सोमवार को निरंजन को अपने घर ले गए जर्जर छत की दीवार में दरार थी दीवार तोड़ने को जैसे ही निरंजन आगे गया पूरी छत भरभरा कर नीचे गिर गई और निरंजन उसी छत के मलवे मे दब गया मलवे में दबे मजदूर को निकालने के बजाय हादसा देखकर मकान मालिक मौके से फरार हो गया पूरी रात मलबे के नीचे मजदूर दबा रहा छत के मलवे के नीचे दबे रहने की वजह से निरंजन की तड़प तड़प कर दर्दनाक मौत हो गई मजदूर के वापस घर ना पहुंचने पर परिजन उसे खोजते रहे लेकिन कहीं पता नहीं चला मंगलवार की सुबह जब मलबे में देखा गया तो मजदूर दबा हुआ था जिसकी मौत हो चुकी थी ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची हल्का पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से शव को बाहर निकाला और लिखा पढ़ी करके शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है पुलिस प्रकरण की जांच में जुट गई है।

रिद्धि सिद्धि कॉलेज में नई शिक्षा नीति पर संपन्न हुई संगोष्ठी

विद्यालय के चेयरमैन पूर्व विधायक संजय कुमार गुप्ता ने कहा कि शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण का सशक्त माध्यम है

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन एवं चुनौतियां एवं विषयक एक संगोष्ठी रिद्धि सिद्धि कॉलेज एवं हायर एजुकेशन भरवारी के लाइब्रेरी हॉल में संपन्न हुई। मुख्य अतिथि के रूप में संस्थान के चेयरमैन पूर्व विधायक संजय कुमार गुप्ता ने अपने संबोधन में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत उसके परिवर्तन एवं प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षा सिर्फ परीक्षा के लिए नहीं होती बल्कि शिक्षा व्यक्तित्व निर्माण का वह सशक्त माध्यम है जिसके जरिए व्यक्ति अपनी विशिष्टता से समाज के अलग स्थान बना सकता है पूर्व की शिक्षा नीति में प्रमाण पत्र और परीक्षाओं की उपयोगिता दिखाई देती थी परंतु आज की वर्तमान शिक्षा नीति में गुणवत्ता एवं व्यक्तित्व की उपयोगिता का समावेश करते हुए उसे योगिता बनाया गया है जो बच्चों के लिए उनके कैरियर निर्माण में सहायक है इस अवसर पर सभी विषय विशेषज्ञों ने प्रकाश डालते हुए बच्चों के नई शिक्षा नीति में होने वाले लाभ को अवगत कराया। इस संगोष्ठी में संस्थान रजिस्टार सुनील द्विवेदी, डिप्टी डायरेक्टर डॉ मयंक मिश्रा सहित सभी शिक्षक शिक्षिका उपस्थित रहे।

बलीपुर टाटा में पांच दिवसीय मेले का आयोजन 2 दिसंबर से होगा शुरू

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। जिले की चायल ब्लॉक के अंतर्गत ग्रामसभा बालीपुर टाटा में विगत 70 वर्षों की भांति इस वर्ष भी 5 दिवसीय मेला का आयोजन 02 दिसंबर से शुरू हो कर 06 दिसम्बर तक आयोजित होगा ग्रामीण क्षेत्र के इस मेले में भारी संख्या में महिला पुरुष बच्चे बूढ़े मेला का लुफ्त उठाते हैं जिसकी जानकारी ग्राम सभा प्रधान पुष्पा देवी पत्नी वीरेंद्र कुमार ने दी है।

विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी आदर्श रामलीला कमेटी मऊ चित्रकूट के कलाकारों की टीम द्वारा प्रभु श्रीराम के जीवन पर आधारित रामलीला मंचन प्रस्तुत किया जाएगा मेला प्रबंधक भंवर सिंह यादव प्रबंधक कल्लू साहू मीडिया प्रभारी गणेश साहू ,मेला महामंत्री नर्मदा वर्मा तीरथ लाल बबलू संगू लाल शिव मोहन ज्ञान सिंह टेनी यादव संदीप पासी रिंकू पासी शिव प्रसाद विश्वकर्मा अशोक यादव आदि लोगों के सहयोग से यह मेला सम्पन्न होगा साथ ही साथ इस ग्राम सभा में तैनात ग्राम सचिव अखिलेश सोनी पर भी एक बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गई है मेले को एक नई दिशा देने में उनकी अहम भूमिका होगी।

सरकारी विद्यालय व पंचायत भवन से लाखों का सामान उठा ले गए चोर

अखंड भारत संदेश

करारी/ कौशांबी। करारी थाना क्षेत्र के बरई बंधवा गांव के सरकारी विद्यालय व पंचायत भवन में ताला तोड़कर लाखों का सामान चोर उठा ले गए है बताया जाता है कि पंचायत भवन से 30 40 कुर्सी इनवर्टर बैटरी डेस्कटॉप सीपीयू प्रिंटर आदि सामान चोर उठा ले गए हैं मंगलवार की सुबह जब ग्रामीणों की नजर पड़ी तब ग्रामीणों ने स्थानीय चौकी व थाना करारी पुलिस को सूचना दिया चोरी की घटना की जानकारी मिलने पर घटनास्थल पर मौके पर पुलिस पहुंची और जांच पड़ताल में जुटी है ग्रामीणों ने बताया है कि 07 सितम्बर को भी बेखौफ बदमाशों ने इसी विद्यालय से चोरी की घटना को अंजाम दिया गया था जिसकी सूचना स्थानीय पुलिस को दी गई थी लेकिन बदमाशों को पुलिस नहीं ढूंढ पाई थी और ना ही कोई कानूनी कार्यवाही की गई थी जो पुलिस के लिए बदमाशों के कारनामे चुनौती बनी है।

अपने को सीएम समझकर गरीबों के घर जेसीवी ले कर पहुँच रहा प्रधान

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। योगी सरकार द्वारा बुलडोजर लगाकर घर गिराए जाने के मामले का दुरुपयोग शुरू हो गया है अब अवैध वसूली में लिप्त लेखपाल भी घर गिराने की धमकी देकर वसूली में लिप्त है।

गजब तो तब हो गया जब ग्राम प्रधान भी लोगों के घर बुलडोजर लेकर पहुंच रहे हैं और उनके घर गिराने की धमकी दे रहे हैं गरीबों के घर गिराने का दबाव बनाकर ग्राम प्रधान वसूली भी कर रहे हैं ताजा मामला कड़ाधाम थाना क्षेत्र के हब्बू नगर का सामने आया है जहां पीड़ित महिला ने एसपी से शिकायत कर प्रधान पर मुकदमा दर्ज कराए जाने की मांग की है। जानकारी के मुताबिक कड़ाधाम कोतवाली क्षेत्र के हब्बू नगर गांव की रहने वाली दलित विधवा सुग्गी देवी पत्नी स्वर्गीय रमेश कुमार पासी ने एसपी को दिए शिकायती पत्र में बताया कि उसे सरकार की ओर से सरकारी आवास मंजूर हुआ है बैंक से रकम निकालने के बाद ग्राम प्रधान जग्गू गुप्ता ने बैंक के बाहर 20 हजार रुपए जबरिया छीन लिया है जमीन पर वह मकान बना रही है लेकिन गांव के प्रधान और थाना कड़ा धाम पुलिस मिलकर उसके सरकारी आवास को नहीं बनने दे रहे हैं अत्याचार करते हुए कड़ाधाम पुलिस प्रधान और बच्छन घोसियाना महिला के निमार्णाधीन मकान पर पहुंच गए और राजगीर को जबरिया पकड़ कर थाने ले गए जिससे निर्माण बंद हो गया रात में राजगीर को छोड़ दिया गया आवास निर्माण की रकम निकालने के बाद प्रधान ने जबरदस्ती 20 हजार रुपए छीन लिया और अब वह और रुपया मांग रहे है ना देने पर जबरिया प्रधान उत्पीड़ित कर रहा है महिला का कहना है कि पुलिस का साथ ग्राम प्रधान और बच्छन दे रहे हैं।

एसपी को दिए शिकायती प्रार्थना पत्र में महिला ने बताया कि इसी तरह मेरी बहन श्रीमती पत्नी रत्तू पासी निवासी हब्बू नगर को भी सरकार की ओर से सरकारी कॉलोनी मंजूर हुई है पैसा बैंक खाते में आ गया है बहन श्रीमती जब बैंक से पैसा निकालने गयी थी तो ग्राम प्रधान जग्गू ने उससे बैंक के बाहर अधिकारियों को घूस देने के नाम पर बीस हजार रुपए जबरिया छीन लिया है श्रीमती कॉलोनी का निर्माण करा रही है लेकिन ग्राम प्रधान जेसीबी मशीन लेकर मौके पर पहुंच गया और कालोनी को पलटवाने की धमकी दे कर अधिकारियों को देने के नाम पर ग्राम प्रधान जग्गू और रकम की मांग करने लगा बड़े समझाने बुझाने के बाद 1000 रुपया लेकर के प्रधान वापस लौटा ग्राम प्रधान लगातार उत्पीड़न आतंकित कर रहा है बैंक से पैसा निकालने में 20 हजार रुपए महिला और बीस हजार रुपए उसकी बहन से जबरिया छिनैती कर ली है शिकायती पत्र के मुताबिक आवास का निर्माण करने पर सार्वजनिक तरीके से खुलेआम ग्राम प्रधान जातिसूचक शब्दों से अपमानित करते हुए गाली गलौज मारपीट कर अपमानित कर रहा है थाना पुलिस का बच्छन सहयोग कर रहा है हद तो तब हो गई जब राजगीर को पकड़ने में थाना पुलिस के साथ बच्छन भी गया था आरोपियों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कराए जाने की मांग की गई है।

बड़ौदा किसान ऋण वितरण दिवस समारोह का हुआ आयोजन

बैंक द्वारा कुल 20 करोड़ के ऋण किए गए स्वीकृत

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। जिला मुख्यालय मंझनपुर में बैंक ऑफ बड़ौदा प्रयागराज क्षेत्र द्वारा एक बड़ौदा किसान ऋण वितरण दिवस समारोह का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में स्वयं सहायता समूह की 100 महिलाएं एवं 300 किसान भाइयों एवं बहनों ने अपनी सहभागिता दर्ज की। उक्त कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर कौशाम्बी डीएम सुजीत कुमार, बैंक ऑफ बड़ौदा लखनऊ अंचल के महाप्रबंधक ब्रजेश कुमार सिंह, बैंक ऑफ बड़ौदा प्रयागराज 2 के क्षेत्रीय प्रमुख प्रमोद कुमार रहे।बैंक द्वारा कुल 20 करोड़ के ऋण स्वीकृत किए गए एवं स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को एवं ट्रैक्टर लोन खाताधारकों को चेक प्रदान किया गया ,उक्त कार्यक्रम में बैंक द्वारा बैंक की अलग-अलग स्कीमों के तहत स्टॉल भी लगाए गए।

ऋण वितरण कार्यक्रम में उपस्थित किसान।

बीसी सखियों को दी गई साड़ी

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। जिले में कार्यरत बीसी सखी को साड़ी वितरण का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया जनपद में कुल 370 बीसी सखी प्रशिक्षित है, इनमें से शासन द्वारा प्राप्त सूची के आधार पर 199 बीसी सखियों को मंगलवार को मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में साड़ी वितरण का कार्यक्रम किया गया। इसके पूर्व प्रथम चक्र में भी 100 बीसी सखियों को साड़ी वितरित की जा चुकी है। मुख्य विकास अधिकारी ने कहा कि शेष बीसी सखियों को भी जल्द ही साड़ी बांट दी जाएगी। यह साड़ी बीसी सखियों का ड्रेस कोड रहेगा इसे पहनकर यह बीसी सखियां अपने कार्य को सम्पन्न करेंगी। साड़ी वितरण कार्यक्रम में डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी मुख्य विकास अधिकारी के साथ विजय कुमार जिला विकास अधिकारी एवं दिव्यांशु सिंह जिला मिशन प्रबंधक एन आर एल एम उपस्थित रहे।

साड़ी वितरण के दौरान उपस्थित बीसी सखी।

बेरुवा स्थित सेंट फ्रांसिस स्कूल में आयोजित हुआ यातायात जागरूकता कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

भरवारी/ कौशांबी। सेंट फ्रांसिस स्कूल बेरूवा मे यातायात जागरूकता का कार्यक्रम विद्यालय के बच्चों ने जागरूकता से संबंधित अनेकानेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए एवं आर्ट एंड क्राफ्ट तथा गणित विषय के अनेकों मॉडल की एग्जीबिशन भी लगाई गई।

उक्त अवसर पर आयोजित गोष्ठी में बोलते हुए ए आर टी ओ तारकेश्वर मल्ल ने कहा कि यहां पर सभी उपस्थित बच्चे कल के भावी भारत की तस्वीर हैं, हमारा भविष्य अच्छा रहे इसके लिए हमें बचपन से ही जागरूक रहना चाहिए एवं अपने घर - परिवार को भी जागरूक करते रहना चाहिए। प्रत्येक बच्चे का यह कर्तव्य बनता है कि वह अपने माता पिता व घर के जो भी उनसे बड़े हैं उन्हें यातायात नियमों का पालन करने के लिए अनुरोध करें, व उन्हे कहें की आप अपनी सुरक्षा के लिए नहीं तो कम से कम अपने पाल्य की सुरक्षा हेतु यातायात के नियमों का पालन करें व स्वयं को सुरक्षित रखें। गोष्ठी में सहभाग कर रहे अतिरिक्त सीओ अवधेश विश्वकर्मा ने भी बच्चों को यातायात का पाठ पढ़ाया तथा कहा कि आप जब भी अपने पैरेंट्स के साथ वाहन से घर से निकले अगर दो पहिया वाहन से हैं तो उन्हें हेलमेट पहनने के लिए अनुरोध करें व चार पहिया वाहन से हैं तो सीट बेल्ट लगवाने का निवेदन करना ना भूलें तथा अपनी अच्छी आदतों में यातायात के नियमों के पालन की आदत भी अपने अंदर समाहित करें। टी आई राकेश चौरसिया ने भी बच्चों को यातायात जागरूकता के नियम बताएं, उक्त कार्यक्रम में प्रधानाचार्य जेराल्ड पी डिसूजा सहित विद्यालय के समस्त शिक्षक शिक्षिकाएं बच्चे व थानाध्यक्ष चरवा उपस्थित रहे।

मन में विश्वास हो तो कभी भी जीवन में नही होगें असफलः कथावाचक

श्रीमद् भागवत कथा के दूसरे दिन भक्ति के सागर में झूमें श्रद्धालु

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। मंझनपुर मुख्यालय में चौधरी बैजनाथ नगर में एक निजी गेस्ट हाउस में चल रही श्रीमद् भागवत कथा में सोमवार को पं0 अखिलेश जी महराज ने आरती पूजन कर मद्भागवत कथा के कपिल अवतार एवं ध्रुव चरित्र की कथा का श्रद्धालुओं को श्रवण कराया।

मंझनपुर मुख्यालय में सोमवार को मद्भागवत कथा का दूसरे दिन पं0 अखिलेश जी महराज ने यजमान विट्टन देवी एवं शारदा प्रसाद गुप्ता भुर्जी एवं कथा सुनने आये श्रद्धालु को पूजन आरती कराते हुए कथा पाठ प्रारम्भ किया। कथावाचक महराज ने कहा कि परमात्मा की भक्ति में उम्र का कोई प्रावधान नहीं

है। भक्ति में सामर्थ्य और विश्वास होना चाहिए। भावपूर्ण भक्ति से ही परमात्मा प्रसन्न होते हैं। उन्होंने ध्रुव चरित्र की कथा सुनाई। कपिल अवतार, ध्रुव चरित्र, सृष्टि की रचना पर प्रकाश डालते हुए कहा कि मनुष्य जीवन आदमी को बार-बार नहीं मिलता है, इसलिए इस कलयुग में दया, धर्म, भगवान के स्मरण से ही सारी योनियों को पार करता है।

उन्होंने कहा कि भगवान विष्णु ने पांचवा अवतार कपिल मुनि के रूप में लिया। इनके पिता का नाम महर्षि कर्दम व माता का नाम देवहूति था। शरशय्या पर पड़े हुए भीष्म पितामह के शरीर त्याग के समय वेदज्ञ व्यास आदि ऋषियों के साथ भगवान श्री कपिल मुनि जी भी वहां उपस्थित थे। भगवान कपिल मुनि जी सांख्य दर्शन के प्रवर्तक हैं। श्री गुरू भगवान कपिल महामुनि जी भागवत धर्म के प्रमुख बारह आचार्यों में से एक हैं। उन्होंने बताया कि, किसी भी काम को करने के लिए मन में विश्वास होना चाहिए तो कभी भी जीवन में असफल नहीं होंगे। जीवन को सफल बनाने के लिए कथा श्रवण करने से जन्मों का पाप कट जाता है। इस मौके पर ज्ञान चन्द्र गुप्ता भुर्जी, आशीष केशरवानी बच्चा, रोहित गुप्ता, महक, पंखुड़ी, संजीव केशरवानी, दीपक जायसवाल, बबलू सराफा, सुनीता कुमारी, ज्ञान देवी, जूली, रानू देवी सहित सैकड़ों की संख्या में श्रदालुओं मौजूद रहें।

सर्किल ऑफिसर ने व्यापारियों संग की बैठक,जाम की समस्या पर दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

अझुवा/कौशांबी। आदर्श नगर पंचायत अझुवा पुलिस चौकी प्रांगड़ में क्षेत्राधिकारी सिराथू डॉ कृष्ण नेपाल सिंह ने सैकड़ों व्यापारियों गणमान्य लोगों को जाम की समस्या को लेकर बैठक की एवम चौकी इंचार्ज अझुवा को नगर पंचायत राष्ट्रीय राजमार्ग एवम गलियों में लगने वाले जाम की समस्या सुलझाने को आवश्यक दिशा निर्देश दिया है इस दौरान मौजूद रहे तमाम व्यापारियों और लोगों ने जाम की समस्या को लेकर अपने सुझाव भी दिए नगर पंचायत किराना गली में अनावश्यक प्रवेश कर रहे ट्रैक्टरो पर लगाम लगाने की बात कही गयी ।भोला चौराहा पर अनियंत्रित टेढ़े मेढ़े खड़े,मोटरसाइकिल, वाहन,ठेलिया ,विक्रम ,टेम्पो पर आवश्यक कार्रवाई का निर्देश दिया है बैठक के दौरान व्यापारी नेता रमेश अग्रहरी, रमेश चंद्र केसरवानी,गुड्डू दराना,फूलचंद्र सभासद,सौरभ केसरवानी,घूरे केसरवानी ,आनंद अग्रहरी, अम्बर भाई आदित्य केसरवानी,संतोष विश्वकर्मा,ज्ञान पाल सहित सैकड़ों व्यापारी गणमान्य लोग मौजूद रहे।

उपस्थित क्षेत्राधिकारी व नगर के

जांच में आरोप की पुष्टि होने के महीनों बाद भी नहीं हुई कोटेदार पर कार्यवाही

गरीबों को राशन ना देना घटतौली की ग्रामीणों ने डेढ़ महीने पहले डीएम से की थी शिकायत

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। पूर्ति निरीक्षकों के भी कारनामे बेहद निराले हैं शिकायतों की पुष्टि होने के बाद भी कार्यवाही नहीं हो रही है आला अफसरों का भी उन्हें तनिक भय नहीं है लगातार घटतौली कालाबाजारी और गरीबों के राशन पर डाका डालने वाले कोटेदारों को संरक्षण देकर पूर्ति कार्यालय वसूली में मस्त हैं जिससे गरीब कमजोर मजलूम कार्ड धारकों को सरकारी खाद्यान्न योजना का लाभ नहीं मिल पा रहा है शिकायतों के बाद भी भ्रष्ट कोटेदारों पर कार्यवाही होती नहीं दिख रही है ताजा मामला नेवादा विकासखंड के किनार ग्राम पंचायत के कोटेदार का है। जानकारी के मुताबिक 15 अक्टूबर को ग्रामीणों ने जिलाधिकारी से शिकायत कर कोटेदार के कारनामे का खुलासा किया था जिस पर डीएम के निर्देश पर पूर्ति निरीक्षक चायल को जांच सौंपी गई 16 अक्टूबर को पूर्ति निरीक्षक जांच करने गांव पहुंची जहां तमाम ग्रामीणों ने बताया कि राशन देने में घटतौली की जाती है कार्ड में निश्चित यूनिट से कम करके राशन दिया जाता है इतना ही नहीं 3 माह के राशन वितरण में 1 माह का राशन गरीबों का गायब कर दिया जाता है और यह कहा जाता है कि सरकार से राशन नहीं मिला है शिकायत की जांच करने के बाद पूर्ति निरीक्षक वापस लौट आई और ग्रामीणों को आश्वासन दिया कि जल्द कार्रवाई होगी।

कोटेदार को जिला पूर्ति कार्यालय ने 21 अक्टूबर को नोटिस जारी किया नोटिस मिलते ही कोटेदार पूर्ति कार्यालय का चक्कर लगाने लगा उसके बाद कहां झोल हो गया कि नोटिस जारी करने के बाद आरोपी कोटेदार पर कार्यवाही करने को पूर्ति विभाग भूल गया उसका कोटा निलंबित नहीं किया गया अभी तक कोटेदार पर मुकदमा नही दर्ज कराया गया जिससे कोटेदार राशन का उठान कर रहा है और ग्रामीणों के साथ घटतौली और उनके राशन का गबन बराबर कर रहा है सूत्रों की माने तो किनार कोटेदार को राहत देने के नाम पर मैडम ने मोटी रकम लेकर समझौता कर लिया है इसके पहले भी मैडम पर कोटेदारों से वसूली का कई बार आरोप लग चुका है अवैध वसूली के चलते कालाबाजारी घटतौली में लिप्त कोटेदार पर डेढ़ महीने बीत जाने के बाद भी कार्यवाही नहीं हो सकी है इस संबंध में जिला पूर्ति अधिकारी से बात की गई तो उन्होंने कहा कि मामला उनके संज्ञान में नहीं है और मामले को संज्ञान लेकर कोटेदार पर कार्यवाही करेंगे।

मंझनपुर पुलिस ने किया पैदल गस्त

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। प्रभारी निरीक्षक मंझनपुर के साथ अतिरिक्त निरीक्षक मंझनपुर एवं उप निरीक्षक थाना मंझनपुर में हमराही पुलिस बल के कस्बा मंझनपुर में पैदल गस्त करके यातायात व्यवस्था शांति व्यवस्था एवं सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिगत संदिग्ध व्यक्ति संदिग्ध वस्तु एवं संदिग्ध वाहनों की चेकिंग कराई गई जिसमें तीन सवारी बिना हेलमेट एवं बिना नंबर प्लेट वालों की विशेष चेकिंग एवं चालान करके हिदायत किया गया एवं जनता के व्यक्तियों से बातचीत करके सुरक्षा का एहसास कराया गया।

संसाधन और स्टाफ की कमी से जूझ रहा वन विभाग कैसे जंगली जानवरों पर लगे रोक

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। जिले का वन विभाग कर्मचारियों और संसाधनों की कमी से जूझ रहा है योगी सरकार और उनके अधिकारी वन विभाग को कर्मचारी और संसाधन उपलब्ध कराकर मजबूत करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं जिससे विभाग आम जनमानस की उम्मीद पर खरा उतरता नहीं दिख रहा है विभाग में दो दर्जन फॉरेस्ट गार्ड की तैनाती होनी चाहिए लेकिन जिले के तीनों रेंज में एक भी फॉरेस्ट गार्ड की तैनाती नहीं है स्टाफ की कमी से वन विभाग जूझ रहा है इतना ही नहीं जंगली पशुओं विषैले जंतुओं अजगर लकड़बग्घे और बंदर को पकड़ने के लिए विभाग के पास औजार और संसाधन नहीं है विभाग में वाहनों की कमी है जिससे कभी अजगर लकड़बग्घे निकलने की शिकायत पर उसे पकड़ने में अपनी जान जोखिम में डालकर विभागीय वन दरोगा और रेंजर आम जनमानस को राहत देते हैं संसाधन वाहन औजार और स्टाफ की कमी के बावजूद विभाग ने कई अजगर को पकड़कर बड़ा जोखिम का काम किया है जिससे विभागीय अधिकारियों कर्मचारियों के अंदर दहशत का माहौल है लेकिन उसके बाद भी वन विभाग में व्याप्त समस्याओं को दूर करने के लिए जनप्रतिनिधियों ने बीड़ा नहीं उठाया है वन विभाग के मंडल और राज्य स्तर के अधिकारियों ने भी कौशांबी वन विभाग को सशक्त करने का प्रयास नहीं किया है जिससे वन विभाग आम जनता की उम्मीदों पर खरा नहीं उतर रहा है योगी सरकार को वन विभाग की समस्याओं को संज्ञान लेना होगा और विभाग को संसाधन औजार वाहन और कर्मचारियों की फौज से सशक्त करना होगा।

डीएम एसपी ने जिला जेल का किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। जिला जेल का डीएम सुजीत कुमार एवम एसपी ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव ने औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जेल की सुरक्षा,कार्यालय व आवास परिसर का भी अधिकारियों ने निरीक्षण किया अधिकारियों ने संबंधित को साफ सफाई सहित आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।इस दौरान जेल अधीक्षक सहित तमाम अधिकारी मौजूद रहे।

अभियुक्त को 02 माह 11 दिन कारावास की सजा

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। 18 नवम्बर 2022 को थाना चरवा अन्तर्गत अभियुक्त के पास से नाजायज गांजा बरामद होने पर थाना चरवा पर पंजीकृत कर अभियुक्त जीवन जीत पुत्र मोतीलाल निवासी परसरा थाना कोखराज को आज को न्यायालय जेएम द्वारा शासन की प्राथमिकता के आधार पर गम्भीर एवं जघन्य अपराधों में पैरवी कर अभियुक्तो को सजा दिलाने के क्रम में पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में प्रभावी पैरवी कराते हुए मानिटरिंग सेल के माध्यम से दो माह 11 दिन के कारावास तथा 700 रुपए के अर्थ दण्ड से दण्डित किया गया अर्थदण्ड न अदा करने पर 07 दिवस अतिरिक्त कारावास की सजा सुनायी गयी।

चेकिंग के दौरान की गई कार्यवाही

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। पुलिस अधीक्षक के निर्देश के क्रम में जनपद स्तर पर विभिन्न थानों व यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनो को चेक किया गया जिसमे यातायात नियमों का उल्लघन करने वाले 761 वाहनों का ई-चालान किया गया तथा 12 वाहनों से 6,000 रुपये सम्मन शुल्क वसूला गया

निरोधात्मक कार्यवाही मे 08 अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में चलाये जा रहे अभियान में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना मंझनपुर से एक थाना पश्चिम शरीरा से दो थाना महेवाघाट से एक थाना सराय अंकिल से दो थाना चरवा से एक थाना कोखराज से एक कुल आठ अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय किया गया।

देश को एक करने में चुनौतियां

राम पुनियानी

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा राहुल गांधी के नेतृत्व में शुरू की गई भारत जोड़ो यात्रा को जबरदस्त जनसमर्थन मिल रहा है। ऐसा लगता है मानो सांझा राष्ट्रवाद में अपने यकीन को रेखांकित करने के लिए लोग इस तरह के किसी आयोजन का इंतजार ही कर रहे थे। पिछले कुछ दशकों में, और विशेषकर कुछ वर्षों में, सांझा भारतीय राष्ट्रवाद कमजोर हुआ है। राहुल गांधी की यात्रा को मिल रहे जनसमर्थन को राष्ट्रीय मीडिया और प्रमुख टीवी चैनल भले ही नजरअंदाज कर रहे हों परंतु सोशल मीडिया इस कमी को काफी हद तक पूरी कर रहा है। सोशल मीडिया पर ऐसे चित्रों और वीडियो की भरमार है जो यह बताते हैं कि हर आयु वर्ग के लोग इस यात्रा से जुड़ रहे हैं। यात्रा को मिल रहे व्यापक जनसमर्थन का एक कारण यह है कि पिछले कई वर्षों से देश में आईडिया ऑफ इंडिया को कमजोर किया जा रहा है भारतीय संविधान के मूल्यों को भी किनारे कर दिया गया है। इसके साथ ही सरकार सामाजिक समानता स्थापित करने और गरीबों और अमीरों के बीच खाई को पाटने के लिए कुछ नहीं कर रही थी। संविधान राज्य से यह अपेक्षा भी करता है कि वह वैज्ञानिक समझ को बढावा देगा। इस दिशा में भी सरकार कोई प्रयास नहीं कर रही थी।

भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है जो जातिगत और लैंगिक समानता के लिए प्रतिबद्ध है। भारत में दैवीय प्राधिकारह्व से शासन करने वाले राजाओं का युग औपनिवेशिक काल में ही समाप्त हो गया था। जहां औपनिवेशिक शासकों ने भारत को लूटने में कोई कसर नहीं उठा रखी वहीं यह भी सच है कि उनके शासनकाल में हमारा समाज बदला। आवागमन और संचार के साधनों के विकास और आधुनिक शिक्षा व्यवस्था व प्रशासनिक प्रणाली ने जातिगत और लैंगिक समीकरणों को बदला और विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच एकता को बढ़ावा दिया। सामंती मानसिकता वाले लोगों ने राष्ट्र निर्माण की इस प्रक्रिया से सुरक्षित दूरी बनाए रखी। उन्होंने फूट डालो और राज करो की नीति को लागू करने में ब्रिटिश सरकार की मदद की जिसकी अंतिम परिणिती था देश का विभाजन और दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे त्रासद पलायन। एक राष्ट्र के रूप में भारत का विकास, औपनिवेशिक शासन के विरूद्ध संघर्ष के दौर में ही शुरू हो गया था। स्वतंत्रता के बाद देश का औद्योगिकरण हुआ और शिक्षा, सिंचाई व स्वास्थ्य अधोसंरचना विकसित की गई। इस दौरान साम्प्रदायिक राष्ट्रवादी, चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान, पहचान से जुड़े मुद्दों पर ही बात करते रहे। समय के साथ हिन्दू सम्प्रदायवादियों ने देश पर अपना वर्चस्व कायम कर लिया। उनके प्रति वफादार लोग हर क्षेत्र में घुसपैठ बनाने लगे। राज्य तंत्र में भी उनके समर्थक विभिन्न पदों पर काबिज हो गए। उन्होंने कारपोरेट जगत में अपने मित्रों की सहायता से मीडिया पर भी कब्जा जमा लिया। उन्होंने सोशल मीडिया सेल भी बनाए ताकि सोशल मीडिया का उपयोग भी उनकी विचारधारा के प्रचार-प्रसार के लिए किया जा सके। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की हमारी विरासत को कमजोर किया। उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर प्राणघातक चोट की और सामाजिक न्याय की स्थापना की राह में रोड़े अटकाए। इसके साथ ही, क्षेत्रीय सिपहसालार भी उभर आए जिनका एजेंडा स्थानीय मुद्दों पर आधारित था और जिनका लक्ष्य केवल एक सीमित क्षेत्र में सत्ता हासिल करना था। वामपंथी दलों, जिन्हें हाशियाकृत वर्गों के अधिकारों का रक्षण करना था, खुद ही हाशिए पर खिसक गए। कुल मिलाकर आज स्थिति यह है कि भाजपा की विघटनकारी राजनीति हाशियाकृत समुदायों को भी अपने झंडे तले लाने का पुरजोर प्रयास कर रही है। उसकी पितृ संस्था, आरएसएस दलितों और आदिवासियों को हिन्दू राष्ट्रवाद से जोड़ने में जुटी हुई है। उसने जमीनी स्तर पर सोशल इंजीनियरिंग के जरिए अगणित सूक्ष्म पहचानें विकसित कर दी हैं ताकि समाज को बांटा जा सके।

इसके साथ ही एक विशद और व्यापक हिन्दू पहचान को भी बढ़ावा दिया जा रहा है। इस पहचान को मजबूती देने के लिए राममंदिर, लव जिहाद, गाय-बीफ जैसे मुद्दे उठाए जा रहे हैं एवं हिन्दुओं में यह डर पैदा किया जा रहा है कि देश में मुसलमानों की आबादी जल्दी ही हिन्दुओं से ज्यादा हो जाएगी।कई दशकों बाद भारत जोड़ो यात्रा, हवा के एक ताजा झोंके की तरह आई है। इससे निश्चित तौर पर देश मजबूत होगा और कांग्रेस एक बेहतर पार्टी बनेगी। इस यात्रा से वे सामाजिक समूह सामने आएंगे जो कमजोर और हाशियाकृत समुदायों के अधिकारों, प्रजातांत्रिक मूल्यों और धार्मिक अल्पसंख्यकों के गरिमापूर्वक जीवन बिताने के हक के समर्थक हैं। यह यात्रा उन्हें एक मानवीय प्रजातांत्रिक समाज को आकार देने के उनके अभियान के लिए एक मंच प्रदान करेगी झ्र ऐसा मंच जो समाज के सभी तबकों के अधिकारों और गरिमा की रक्षा करने का काम करेगा। यात्रा का एक अन्य सराहनीय पहलू यह है कि बहुवाद, विविधता और प्रजातंत्र के मूल्यों में यकीन रखने वाले अनेक सामाजिक संगठन एवं राजनैतिक दल इसका समर्थन कर रहे हैं। वे यात्रा के कुछ हिस्सों में भागीदारी भी कर रहे हैं।

अब तक यात्रा जिन इलाकों से गुजरी है उनमें से किसी में भी मुसलमानों की बहुसंख्या नहीं थी। जहां हमें मुस्लिम नेतृत्व के कट्टरपंथी तबके का पुरजोर विरोध करना चाहिए वहीं हमें आम मुसलमानों (और ईसाईयों) जो कि साम्प्रदायिक राजनीति के पीड़ित रहे हैं, से जुड़ने का हर संभव प्रयास करना चाहिए। हिजाब पहने हुए एक छोटी सी लड़की के राहुल गांधी के बगल में चलने का मजाक बनाए जाने के पीछे निश्चित तौर पर साम्प्रदायिक ताकते थीं। यह जरूरी है कि यात्री धार्मिक अल्पसंख्यकों से घुलें-मिलें। हमारे देश के राष्ट्रपिता यही करते थे।

हालात को बेहतर करने के लिए न तो कोई शार्टकट है और ना ही कोई जादू की छड़ी। पहचान की राजनीति के मजबूत होने से देश बहुत कमजोर हुआ है। सकारात्मक भेदभाव के जरिए विभिन्न जातियों के बीच के अंतर को पाटने के प्रयासों की गति भी धीमी हुई है। यह यात्रा एक मील का पत्थर है और ईश्वर अल्लाह तेरो नाम को देश की सामूहिक चेतना का अंग बनाने और जाति के उन्मूलन की प्रक्रिया की शुरूआत है। यह जरूरी है कि यात्रा उन इलाकों से गुजरे जहां मुसलमानों व पूर्व अछूतों की बड़ी आबादी हो। भारत जोड़ो (और नफरत छोड़ो) के नारे को जनता का प्रेम और समर्थन मिल रहा है।

हमें आर्थिक, सामजिक और लैंगिक असमानता के खिलाफ संघर्ष शुरू करना होगा। ऐसा कर हम उस भारत को पुनर्जीवित कर सकेंगे जिसका सपना हमने स्वाधीनता संग्राम के दौरान देखा था। इस बात की आवश्यकता भी है कि यात्रा द्वारा जिस सकारात्मक वातावरण का सृजन किया जा रहा है उसे आगे भी बनाए रखने के लिए प्रयास किए जाएं। और यही सबसे बड़ी चुनौती होगा। देश में आरएसएस की लाखों शाखाएं हैं जो दिन-रात पहचान की राजनीति को मजबूती देने और उस प्राचीन भारत का महिमामंडन करने में जुटी रहती हैं, जिसमें किसी भी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का निर्धारण उसकी जाति, वर्ण और लिंग से होता था। आज जरूरत इस बात की है कि सेवादल जैसे संगठनों को मजबूत किया जाए और ऐसे सामुदायिक केन्द्र स्थापित हों जो शांति और सौहार्द के मूल्यों को बढ़ावा दें। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि आज भी भारत के अधिकांश लोग शांति और प्रेम की राह पर ही चलना चाहते हैं। लोगों की इस मूल मनोवृत्ति को उन ताकतों ने दबा दिया है जो न तो राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का हिस्सा थीं और ना ही उन्होंने भारत को एक राष्ट्र बनाने वाली किसी गतिविधि में कभी हिस्सेदारी की।

अब तक यात्रा जिन इलाकों से गुजरी है उनमें से किसी में भी मुसलमानों की बहुसंख्या नहीं थी। जहां हमें मुस्लिम नेतृत्व के कट्टरपंथी तबके का पुरजोर विरोध करना चाहिए वहीं हमें आम मुसलमानों (और ईसाईयों) जो कि साम्प्रदायिक राजनीति के पीड़ित रहे हैं, से जुड़ने का हर संभव प्रयास करना चाहिए। हिजाब पहने हुए एक छोटी सी लड़की के राहुल गांधी के बगल में चलने का मजाक बनाए जाने के पीछे निश्चित तौर पर साम्प्रदायिक ताकते थीं

संपादकीय

अमीरी-गरीबी में बढ़ती खाई

गुजरात के विधानसभा चुनाव का एक मुख्य मुद्दा अमीरी गरीबी के बढ़ते फासले एवं गरीबों की दुर्दशा का होना चाहिए था, लेकिन दुर्भाग्य से यह मुद्दा कभी भी चुनावी मुद्दा नहीं बनता। अमीर अधिक अमीर हो रहे हैं और गरीब अधिक गरीब। गौतम अडाणी एवं मुकेश अंबानी के दिन दोगुने रात चौगुने फैलते साम्राज्य पर उंगली उठाई जानी चाहिए, पर कोई भी राजनीतिक दल यह नहीं कर पा रहे हैं। विपक्ष के सामने इससे अच्छा क्या मुद्दा हो सकता है? इस मामले में राहुल गांधी ने पहली बार अपनी भारत जोड़ो यात्रा में यह मुद्दा उठाकर अपने राजनीतिक कद को तनिक ऊंचाई दी है। उनके कारण कम से कम अमीर और गरीब के बीच बढ़ती हुई खाई का सवाल देश के मानस पटल पर दर्ज हुआ है। राहुल गांधी ने लगातार गरीबों की दुर्दशा और अमीरों की बढ़ती दौलत का सवाल उठाया है। राजनीति से इतर अर्थशास्त्रियों और विश्व की नामचीन संस्थाओं की रपटों में यह सवाल लगातार रेखांकित हो रहा है। गरीबी-अमीरी के असंतुलन को कम करने की दिशा में काम करने वाली वैश्विक संस्था ऑक्सफैम ने अपनी आर्थिक असमानता रिपोर्ट में समृद्धि के नाम पर पनप रहे नये नजरिया, विसंगतिपूर्ण आर्थिक संरचना एवं अमीरी गरीबी के बीच बढ़ते फासले की तथ्यपरक प्रभावी प्रस्तुति देते हुए इसे घातक बताया है। आज देश एवं दुनिया की समृद्धि कुछ लोगों तक केन्द्रित हो गयी है, भारत में भी ऐसी तस्वीर दुनिया की तुलना में अधिक तीव्रता से देखने को मिल रही है। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री थॉमस पिकेटी के निर्देशन में बनी वर्ल्ड इनिक्वालिटी रिपोर्ट 2022 भारत की आर्थिक विषमता की तस्वीर पेश करती है। इसके अनुसार 2021 में भारत के हर वयस्क व्यक्ति की औसत आय प्रतिमाह 17 हजार के करीब थी। लेकिन देश की निचली आधी आबादी की औसत मासिक आय 5 हजार भी नहीं थी, जबकि ऊपर के 10 प्रतिशत व्यक्तियों की औसत मासिक आय 1 लाख के करीब थी। शीर्ष पर बैठे 1 प्रतिशत की प्रति व्यक्ति मासिक आय लगभग चार लाख रुपए थी। देश में मानवीय मूल्यों और आर्थिक समानता को हाशिये पर डाल दिया गया है और येन-केन-प्रकारेण धन कमाना ही सबसे बड़ा लक्ष्य बनता जा रहा है। आखिर ऐसा क्यों हुआ? क्या इस प्रवृत्ति के बीज हमारी परंपराओं में रहे हैं या यह बाजार के दबाव का नतीजा है? कहीं शासन-व्यवस्थाएं गरीबी दूर करने का नारा देकर अमीरों को प्रोत्साहन तो नहीं दे रही है? इस तरह की मानसिकता राष्ट्र को कहां ले जाएगी? ये कुछ प्रश्न अमीरी गरीबी की बढ़ती खाई और उसके तथ्यों पर मंथन को जरूरी बनाते हैं। क्या देश एवं दुनिया में गैर बराबरी घट रही है या बढ़ रही है? वर्ल्ड इनिक्वालिटी रिपोर्ट बताती है कि नब्बे के दशक से लेकर अब तक पूरी दुनिया में गैर बराबरी बढ़ी है। भारत में अमीर और गरीब के बीच खाई और भी तेजी से बढ़ी है। कोविड महामारी का दुनिया में गैर बराबरी पर क्या असर पड़ा, इसके आंकड़े हमें वर्ल्ड बैंक द्वारा 2022 में प्रकाशित रिपोर्ट से मिलते हैं।

प्रोस्थेटिक एवं ऑर्थोटिक्स प्रोफेशनल की भूमिका अग्रणी

प्रोस्थेटिक एवं ऑर्थोटिक्स चिकित्सा विज्ञान की वह शाखा है जिसमें दिव्यांगजन के शारीरिक पुनर्वास को सुनिश्चित किया जाता है। अतः यह शारीरिक पुनर्वास के क्षेत्र में आधुनिक उपचार के नए आयाम है, जो ऑर्थोपेडिक एवं न्यूरोमस्कुलर विकारों एवं कमियों के साथ-साथ जन्मजात विकृतियों और दुर्घटना में अंग विच्छेदन के पुनर्वास में अग्रणी एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दिव्यांगजन के शारीरिक एवं सामाजिक पुनर्वास को सुनिश्चित करना, स्वावलंबी उत्पादक एवं आत्मनिर्भर बनाना तथा दिव्यांगजन को समाज में सम्मानजनक जीवन हासिल करने में प्रोस्थेटिक एवं ऑर्थोटिक्स प्रोफेशनल की भूमिका अग्रणी एवं सराहनीय रही है। जिस प्रकार हमारा देश अन्य क्षेत्रों में तरक्की कर रहा है, उसी प्रकार हमारे देश के प्रोस्थेटिस्ट एवं ऑर्थोटीस्ट दुनिया भर में अपना नाम रोशन कर रहे हैं व संसार की अच्छी से अच्छी तकनीक का प्रयोग कर दिव्यांगजन के जीवन में नई तकनीक का इस्तेमाल कर दिव्यांगजन का पुनर्वास कर उन्हें नया जीवन दे रहे हैं। प्रोस्थेटिक एवं ऑर्थोटिक चिकित्सा विज्ञान की वह दो शाखाएं हैं जिसमें अंग विच्छेदन में पूर्ण पुनर्वास उपलब्ध कराने के साथ-साथ हड्डी रोग, न्यूरो सर्जरी, प्लास्टिक सर्जरी आदि शाखाओं के साथ सहायक उपकरणों की डिजाइन एवं निर्माण करके सहयोग उपलब्ध कराया जाता है। प्रोस्थेटिक एवं ऑर्थोटिक प्रोफेशनल का मुख्य कार्य प्रोस्थेटिक शाखा के अंतर्गत अनुवांशिक या किसी दुर्घटना में अंग विच्छेदन को कृत्रिम प्रतिस्थापन कराकर शारीरिक पुनर्वास उपलब्ध कराना होता है। जिस में खोए हुए अंग से संबंधित शारीरिक संरचना का अध्ययन खोए हुए अंग का कृत्रिम प्रारूप तैयार करना एवं कृत्रिम अंग के निर्माण द्वारा शारीरिक पुनर्वास उपलब्ध कराना आदि सम्मिलित होता है। ऑर्थोटिक शाखा के अंतर्गत चिकित्सा विज्ञान की विभिन्न शाखाओं जिस में मुख्यतः हड्डी रोग न्यूरो सर्जरी एवं प्लास्टिक सर्जरी विशेषज्ञ एवं मरीजों को शारीरिक पुनर्वास से संबंधित उपकरणों बरेसस, कैलीपर इत्यादि को तैयार कर परामर्श एवं सहयोग उपलब्ध कराया जाता है। प्रोस्थेटिक ऑर्थोटिक प्रोफेशनल में प्रौद्योगिकी की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। टेक्नोलॉजी के नित नए विकास से पिछले दो दशक में इस क्षेत्र में चमत्कारिक विकास हुआ है, जिससे दिव्यांगजन के कृत्रिम अंग एवं सहायक उपकरणों की तकनीक में बहुत बदलाव आए हैं जिसमें अनेक प्रकार के कंप्यूटर चालित कृत्रिम अंग, कॉस्मेटिक, हाईटेक कैलीपर इत्यादि का निर्माण होने लगा है, जिससे दिव्यांग जनों का जीवन सरल एवं सुगम बनाया जा रहा है।

मानवता को निगलता आस्था संकट का दावानल

डा। रवीन्द्र अरजरिया

जीवन में आस्था का महात्व सर्वोच्च है। आस्था का सामान्य अर्थ विश्वास की चरम सीमा पर स्थापित हो जाना है। यही विश्वास जीव के जन्म लेते ही उसे अपनी मां के प्रति, फिर परिवार के प्रति और फिर आसपास के लोगों के प्रति जागृत करता है। यहीं से संस्कारों का जन्म होता है, आदतें पडतीं हैं और स्वभाव बन जाता है। परिवार में होने वाले क्रियाकलाप दिनचर्या मे ढल जाते हैं। यहीं से प्रारम्भ होती है परमशक्ति के प्रति एक विशेष प्रकार की निष्ठा। आराधना, उपासना और साधना का क्रम धीरे-धीरे आगे बढते हुए पूजा पध्दति का रूप ले लेता है। व्यक्तिगत अनुभूतियों में फलित होने वाली क्रियाओं को पूर्ण सत्य मानने वाले उन्हीं का उपदेश जनकल्याणार्थ करने लगते हैं। यह क्रम अनादिकाल से चला आ रहा है। वर्तमान समय में यही व्यक्तिगत अनुभूतियों का परिणाम और निजी पूजा पध्दति दूसरों पर थोपने का क्रम चल निकला है। एक ही तरह के सिध्दान्तों को अंगीकार करने वाले भी अपनी-अपनी क्रियाओं को अलग-अलग ढंग से परोसने लगे हैं जिसके कारण विभेद की स्थिति ने निर्मित हो रही है और एक ही सिध्दान्त के मानने वालों के मध्य भी तनाव पैदा होने लगा है। यह स्थिति वैदिक, तांत्रिक, अघोर आदि पध्दतियों के बीच भी है तो वहीं शिया, सुन्नी, बहावी जैसे वर्गो को निर्मित कर रहे हैं। ऐसा ही कैथोलिक-पोटेस्टेन्ट, श्वेतांबर-पीतांबर तथा सगुण-निर्गुण के मध्य भी देखने को मिलता है। दूसरी ओर विपरीत सिध्दान्तों को स्वीकारने वाले भी कठोरता के साथ लोगों पर स्वयं के क्रियाकलापों को मानने का दबाव बना रहे हैं। धनबल, जनबल और राजबल के आधार पर जुल्म की नई दास्तानें लिखीं जा रहीं हैं। कहीं लालच का रसगुल्ला खिलाने वाले पश्चिमी लोग विश्व के सरल लोगों को बरगलाने में लगे हैं तो कहीं बलपूर्वक स्वयं की परम्पराओं को मनवाने का क्रम चल रहा है। अतीत में जानबूझकर लागू किये गये कानून वर्तमान में अपने गुल खिला रहे हैं। समूची दुनिया में मानवता के आधार पर भावनात्मक आहुतियां देने वाले आज जुल्म का शिकार हो रहे हैं। यह जुल्म जहां दो विपरीत सिध्दान्तों को मानने वालों के मध्य हो रहा है तो वहीं एक ही सिध्दान्त की अनेक व्याख्यायें होने से पृथक-पृथक कृत्य अपनाने वालों के बीच भी छिडा है। सर्वोच्च परमशक्ति पर विश्वास रखने का ढकोसला करने वाले वास्तव में उस सत्ता में विश्वास ही नहीं रखते बल्कि लुभावने शब्दों में मनमानी व्याख्या करने वालों पर विश्वास रखते हैं। ऐसे में व्याख्याकरों, उपदेशकारों, टीकाकारों, तकरीरकारों, प्रवचनकारों आदि का एक बडा तबका स्वयं के भौतिक लाभ के लिए ही अलौकिक सत्ता को हथियार बना रहा है, विसंगतियां प्रस्तुत कर रहा हैं, जीवन के बाद के अनदेखे संसार का काल्पनिक चित्र उपस्थित करता है और फिर विश्वास की आड में लोगों को अंधविश्वासी बना डालता हैं। अंधविश्वासी बने लोग ही तो फिदायनी, आत्मघाती और जेहादी बनकर कल्पना लोक में सुख भोगने की लालसा को फलित होते देखना चाहते हैं। उन्हें नहीं मालूम कि वे जिस के पीछे भाग रहे है। वह केवल और केवल मृगमारीचिका ही है। ईमानदाराना बात तो यह है कि आज संसार में लगभग सभी लोग किसी न किसी समस्या से ग्रसित हैं। भौतिक समस्या, शारीरिक समस्या, सामाजिक समस्या, पारिवारिक समस्या, भावनात्मक समस्या से लेकर वैभव की कामना, विलासता के सपने, सुख के हिंडोले, अकर्मण्यता के वर्चस्व, सम्मान की भूख, सत्कार की प्यास जैसे अनगिनत कारकों के मकडजाल में लोग जकडते जा रहे हैं। वे इस नाशवान शरीर के एक दिन समाप्त हो जाने की सच्चाई को भी झुठलाये बैठे हैं। ऐसे लोग ज्यादा से ज्यादा धन संचय, सम्पत्ति संचय और वैभव संचय कर लेना चाहते हैं ताकि उनका तथा उनके परिवारजनों का भविष्य सुरक्षित हो सके। यह सारा परिदृश्य उन व्याख्याकारों की देन है जो स्वयं को परमशक्ति के सबसे निकट होने का दावा करते हैं। ऐसे लोग न तो सत्य को जानते हैं और न ही सत्य को जानने देने चाहते हैं। पीडित मानवता के हित में काम करने के लिए सभी धर्मों में निर्देश दिये गये हैं परन्तु पीडित मानवता की परिभाषायें सीमित लोगों के समुदाय तक सिमट कर रह गई हैं। समान आचरण करने वालों के हितों को साधने का काम करना ही धार्मिक आचरण है, ऐसा कहकर अनेक व्याख्याकारों ने सर्वोच्च सत्ता के निदेर्शों को ही विकृत कर दिया है। गहराई से अध्ययन करने पर पता चलता है कि दूसरों को धर्म की शिक्षा देने वाले स्वयं के लिए तथा अपनों के लिए दोहरे मापदण्ड अपनाते हैं। लोगों को काम, क्रोध, मद, लोभ के भंवर जाल से निकालने का प्रवचन देने वाले अधिकांश व्याख्याकार स्वयं इसी दलदल में आकण्ठ डूबे नजर आते हैं। धन के प्रति लोभ, सम्मान के प्रति मद, इच्छा के विरुध्द कार्य होने पर क्रोध और अनुकूल परिस्थितियां मिलते ही काम जागृत होने वाली स्थितियों में जकडे अनेक व्याख्याकारों व्दारा मंच के पीछे के आचरणों का प्रत्यक्षीकरण ही उनकी वास्तविकता होती है। ऐसे लोग लुभावने शब्दों के जाल में श्रध्दालुओं को फंसाकर उन्हें धर्म के नाम पर एकजुट करते हैं और फिर शुरू कर देते हैं अपनी सोचे-समझे षडयंत्र का क्रियांवयन। धर्म संकट में है, का नारा बुलंद किया जाता है। वहीं हाथी के दांतों की कहावत को चरितार्थ करने वाले मौलावियों-मौलानाओं की अनेक जमातें भी स्वयं की संतानों को अत्याधुनिक संसाधन उपलब्ध करवाकर उनके भविष्य को उज्जवल करने में लगीं हैं। दूसरी ओर यही जमातें अपने अनुयायियों, उनकी संतानों और सहयोगियों को कट्टरपंथ की शिक्षा देकर उन्हें पत्थर, हथियार और बम पकडा रहे हैं। इस्लाम खतरे में हैं, को फैलाया जाता है। धर्म के नाम पर मरने वालों को शहीद बताकर तथा धर्म के नाम पर मारने वालों को गाजी के रूप में इज्जत देकर कयामत से पहले ही जन्नत नसीब होने का दावा करने वाले यह सब केवल अनुयायियों के लिए ही लागू करते हैं। न तो वे स्वयं ही इस राह पर चलते हैं और न ही स्वयं के परिवारजनों को ही चलने देते हैं। यही हाल दुनिया के विभिन्न मतावलम्बियों के वर्गो में भी देखने को मिलता है। समाज के समक्ष और एकांत में किये जाने वाले आचरणों में जमीन आसमान का अंतर गहरी खाई बनता जा रहा है जिससे उठने वाला तूफान निरंतर तेज होता जा रहा है। यही कारण है कि आज समूचे विश्व में आस्था संकट का दावानल समूची मानवता को निगलता जा रहा है और आम आवाम हवा के रुख के साथ विवेक शून्य होकर उडती जा रही है। ऐसे में वास्तविक धर्म की संवेदनाशीलता किस्तों में कत्ल हो रही है। आवश्यकता है तो समाज की इकाई को स्वयं के निरीक्षण, परीक्षण और मूल्यांकन की, तभी अन्तरआत्मा के शब्द सुनाई पडेंगे और उनके आधार पर मानवता का मूल्यनिष्ठ समाज पुनर्निमित हो सकेगा। इस बार बस इतना ही। अगले सप्ताह एक नई आहट के साथ फिर मुलाकात होगी।

उपचुनाव के संघर्ष में फंसी राजस्थान भाजपा

रमेश सर्राफ धमोरा

राजस्थान में आगामी पांच दिसंबर को सरदारशहर विधानसभा उपचुनाव के लिए वोट डाले जाएंगे। उपचुनाव जीतने के लिए जहां प्रदेश में सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी के नेता अपनी पूरी ताकत लगाए हुए हैं। वही मतदान से पूर्व ही भाजपा नेताओं ने हार मान ली है। भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया ने पिछले दिनों बयान दिया था कि उपचुनाव में कांग्रेस जीतती है और मुख्य चुनाव में भाजपा जीतती है। पूनिया का कहने का आशय था कि राजस्थान में विधानसभा के जो उपचुनाव हुए हैं उनमें अधिकांश में कांग्रेस पार्टी जीती है। भाजपा सिर्फ राजसमंद विधानसभा सीट का ही उपचुनाव जीत पाई है। राजसमंद में भाजपा विधायक किरण माहेश्वरी के निधन होने से उनकी बेटी दीप्ति माहेश्वरी को टिकट देकर भाजपा ने उपचुनाव लड़वाया था और दीप्ति माहेश्वरी चुनाव में जीत गई थी। इसके अलावा अन्य सभी सात विधानसभा सीटों के उपचुनाव में भाजपा की हार हुई थी। इतना ही नहीं भाजपा ने धरियावद से पार्टी विधायक गौतम लाल मीणा के निधन से हुए उपचुनाव में उनके बेटे कन्हैया लाल मीणा का टिकट काटकर खेत सिंह को चुनाव लड़वाया था। जहां भाजपा प्रत्याशी को कांग्रेस के पूर्व विधायक नगराज मीणा के हाथों हार का मुंह देखना पड़ा था। कांग्रेस ने जितने भी विधानसभा उप चुनाव जीते उन सभी सीटों पर मृतक विधायकों के परिवार जनो को ही प्रत्याशी बनाकर सहानुभूति फैक्टर का फायदा उठाया था। जबकि भाजपा ऐसा करने में विफल रही। चूरू जिले की सरदारशहर सीट पर भाजपा ने पूर्व में चार बार चुनाव लड़ चुके अशोक पिंचा को अपना प्रत्याशी बनाया है। अशोक पिंचा एक बार 2008 में जीतने में सफल भी रहे थे। मगर उसके बाद लगातार हारते रहे हैं। हालांकि पिंचा ने उप चुनाव लड़ने के लिए मना कर दिया था। मगर पार्टी नेतृत्व ने उन्ही पर भरोसा जताते हुए उन्हें उन्हें चुनाव लड़ने के लिए मैदान में उतार दिया। सरदारशहर विधानसभा सीट भाजपा के लिए ज्यादा अच्छी नहीं मानी जाती है। भाजपा प्रत्याशी सिर्फ दो बार 1980 में भाजपा के मोहनलाल चुनाव जीते थे। मगर उनके निधन पर 1982 में हुए उपचुनाव में कांग्रेस के केसरी चंद बोहरा जीतने में सफल रहे थे। 2008 में भाजपा के अशोक पिंचा चुनाव जीते थे। इसके अलावा सरदार शहर में भाजपा कभी कोई चमत्कार नहीं दिखा पाई थी। कांग्रेस ने जहां सात बार जीते हुए विधायक भंवरलाल शर्मा की मृत्यु होने पर उनके बेटे अनिल शर्मा को मैदान में उतारा है। वहीं राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी ने लालचंद मुंड को प्रत्याशी बनाया है। नागौर सांसद हनुमान बेनीवाल की राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी का प्रत्याशी आने से सरदार शहर में मुकाबला तिकोना माना जा रहा है। लालचंद मुंड जाट समाज से आते हैं तथा एक बार पूर्व में बसपा से चुनाव लड़ चुके हैं। वह पिछले पांच साल से डेयरी चेयरमैन है तथा पूर्व में सरपंच भी रह चुके हैं। अभी उनकी पत्नी सरपंच है। सरदारशहर विधानसभा क्षेत्र में सबसे अधिक जाट मतदाताओं की संख्या है। ऐसे में यदि जाट मतदाता लालचंद मुंड के पक्ष में एकजुट हो जाते हैं तो चुनावी संघर्ष काफी कड़ा हो सकता है। कांग्रेस प्रत्याशी अनिल शर्मा ब्राह्मण समाज से हैं। अनिल शर्मा को गहलोत सरकार में राज्यमंत्री का दर्जा मिला हुआ था। उनके पिता भंवरलाल शर्मा राजस्थान ब्राह्मण महासभा के अध्यक्ष थे तथा राजस्थान में भैरोसिंह शेखावत की सरकार में नहर मंत्री रह चुके थे। सरदारशहर से सात बार जीतकर भंवरलाल शर्मा राजस्थान के बड़े नेता माने जाते थे। कांग्रेस प्रत्याशी अनिल शर्मा को जहां सहानुभूति के वोट मिलने की पूरी संभावना है। वही वह स्वयं भी अपने पिता के साथ राजनीति में पूरी तरह से सक्रिय रहे हैं। क्षेत्र के मतदाताओं से उनकी सीधी पहचान है। राजस्थान में कांग्रेस की सरकार होने का भी उनको पूरा फायदा मिलेगा। अशोक शर्मा के नामांकन के वक्त स्वयं मुख्यमंत्री अशोक गहलोत मौजूद रहे थे। राजस्थान के राजस्थान सरकार के कई मंत्री, विधायक सरदारशहर उपचुनाव जीतने के लिए पूरा जोर लगा रहे हैं।

भाजपा प्रत्याशी अशोक पिंचा की स्वयं की छवि काफी साफ-सुथरी है। मगर उन्हें पार्टी की तरफ से भरपूर सहयोग नहीं मिल पा रहा है। केंद्रीय राज्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल को भाजपा प्रत्याशी अशोक पिंचा के चुनाव प्रभारी बनाए जाने के कारण वसुंधरा गुट के नेता ज्यादा सक्रिय नजर नहीं आ रहे हैं। अर्जुनराम मेघवाल सांसद बनने से पहले कुछ समय तक चूरू जिले के कलेक्टर रह चुके हैं। इसी कारण उनको सरदारशहर विधानसभा उपचुनाव की कमान दी गई है। अर्जुनराम मेघवाल बड़बोली किस्म के नेता है। इसलिए वह पार्टी नेताओं को एकजुट करने में सफल नहीं हो पा रहे हैं। अशोक पिंचा को पार्टी टिकट दिलाने में पूर्व सांसद रामसिंह कस्वां व विधानसभा में उप नेता राजेंद्र राठौड़ की महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने ही पिंचा को चुनाव लड़ने के लिए तैयार किया था। हालांकि प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद लगातार चुनाव में हारने के कारण सतीश पूनिया की छवि एक हारने वाले प्रदेश अध्यक्ष की बन चुकी है। इसी कारण प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया ने पिछले दिनों बयान भी दिया था कि यदि पार्टी के सभी नेता मिलकर मेहनत करेंगे तो हम उपचुनाव जीत सकते हैं। सरदार शहर में भाजपा की स्थिति मजबूत करने के लिए वसुंधरा सरकार में मंत्री रहे राजकुमार रिणवा व गहलोत सरकार में संसदीय सचिव रहे जयदीप डूडी को भाजपा में शामिल करवाया गया है। दोनों नेताओं को उपचुनाव में सक्रिय भूमिका होकर मेहनत करने की जिम्मेदारी दी गई है। राजकुमार रिणवा 2018 के विधानसभा चुनाव में टिकट कटने के कारण रतनगढ़ से निर्दलीय चुनाव लड़े थे और जमानत जप्त करवा बैठे थे। फिर वह कांग्रेस में शामिल हो गए थे। मगर वहां भी उन्हें महत्व नहीं मिला था। इस कारण वह काफी दिनों से भाजपा में आने का प्रयास कर रहे थे। मगर प्रदेश अध्यक्ष सतीश पूनिया ने उनकी घर वापसी रोक रखी थी।

लेकिन विधानसभा उपचुनाव के कारण उनकी घर वापसी हो गई। इसी तरह भादरा से निर्दलिय विधायक रहे जयदीप डूडी भी कांग्रेस में थे मगर वहां भी उनकी दाल नहीं गली तो कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हो गये। राजकुमार रिणवा जहां ब्राह्मण समाज से है वहीं जयदीप डूडी जाट समाज से है।

यह तेरा रंग, यह मेरा रंग

डॉ. सुरेश कुमार

यह विश्व चमगादड़ की तरह शीर्षासन कर रहा है। अंतर केवल इतना है कि बीच-बीच में ऋतुएँ सामाजिक दूरी के नाम पर अब-तब आ जा रही हैं। हाथों में मेहंदी की गहरी लाली की तरह सूर्य गहरा गया है। किरणें अजीबोगरीब लालिमा फैलाने पर मजबूर हैं। सैनिटाइजर से बार-बार मेहंदी लगे धुलने वाले हाथ उसे सूखने नहीं दे रहे हैं। मेहंदी झड़ती जा रही है। लालिमा से वंचित हाथों का सूनापन, क्रंदन, हृदयविदारक विलाप नयनों के कुएँ से अश्रुओं को सींच रहा है। हृदय में लगी आग पर अग्निशमन सा काम कर रहा है।

लेकिन पीड़ा की अग्नि बुझने का नाम नहीं ले रही है। न जाने वह नन्हीं बच्ची कहाँ से आयी थी। अपनी दोनों हथेलियों पर मेहंदी रचाए निश्चिंत होकर खेल रही थी। खेल-खेल में मानो उसने टूटते आकाश को अपनी उंगलियों से थाम लिया हो।

आकाश के वक्ष पर नन्हीं बच्ची की हथेलियों की मेहंदी लग सी गयी है। यह देख बादलों का हृदय पसीज रहा है। उसे धोने बादल बारिश की बौछार कर रहा है। मानो ऊपर की ओर ताकती नन्हीं बच्ची के चेहरे पर आशा की लालिमा वाली मेहंदी बहकर गिर रही हो। दुर्भाग्य से मेहंदी से मेंह ऐसे गायब हो रहा है जैसे मानवता से मानव। मेंहहीन लालिमा रक्त सी प्रतीत हो रही है। यही लालिमा हमारे खून में बहने लगी है। स्वार्थी खून कब का पानी बन चुका है। उसे दुनिया की नहीं अपनी परवाह है। ऐसे खून की लालिमा पान की पीक से भी भद्दी और त्याज्य होती है।

श्रीमद्भागवत महापुराण कथा के पांचवे दिन, श्री कृष्ण के महिमा की हुई बखान

भगवत चरित जे सुनत अघाहीं, रस विशेष जाना तिन नाहीं

सफीपुर उन्नाव । साहित्यकार, उपन्यासकार एवं सूफी संतों की नगरी सफीपुर में मोटेश्वर महादेव मंदिर के समीप स्थित भगवती चरण वर्मा पार्क में चल रही श्रीमद् भागवत महापुराण कथा के पंचम दिवस मंगलवार को कथा व्यास संत रामस्वरूप जी ब्रह्मचारी के द्वारा कथा पांडाल में उपस्थित हरि हर भक्त प्रेमियों को पार ब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का विस्तार पूर्वक वर्णन सुनाया गया। व्यास ने श्रोताओं को बताया कि वसुदेव देवकी सुत एवं नंद यशोदा नंदन श्री कृष्ण ने किस प्रकार से अपनी लीलाओं के माध्यम से कंस द्वारा भेजे गए अनेकों असुरों का संहार किया। श्रोताओं को भागवत कथा में कृष्ण के जन्म से लेकर उनकी समस्त बाल लीलाओं का विस्तार पूर्वक वर्णन कर व्यास ने ईश्वर के जन्म

की लीलाओं की कथा भगवत प्रेमियों को सुनाई। की किस प्रकार जन्म लेकर भगवान श्री कृष्ण के द्वारा धर्म की रक्षा, स्थापना कर असुरों का नाश किया गया। भागवत कथा में व्यास श्री ब्रह्मचारी जी ने भक्त समुदाय को यह भी बताया कि, किस प्रकार से गोपियों द्वारा चोरी कर मक्खन खाने की शिकायत किए जाने पर मैया यशोदा ने बाल कृष्ण भगवान को ओखली से बांध दिया था।

कथा में श्रोताओं को यह भी सुनाया गया कि एक बार बाल कृष्ण कन्हैया को स्नान करा मैया यशोदा ने उनका श्रंगार किया। तभी मां यशोदा को सत्य का ज्ञान कराने के लिए श्री कृष्ण ने उन्हें अपने मुख में संपूर्ण ब्रह्मांड के दर्शन कराएं जिससे मैया यशोदा कुछ भयभीत हुई। किंतु पुनः भक्त वत्सल भगवान श्री कृष्ण ने मां यशोदा के द्वारा उन पलों का रहस्य अपनी लीलाओं के द्वारा भुला कर उन्हें अपने को मात्र एक सामान्य पुत्र के ही रूप में समझने का ही ज्ञान कराया गया। तथा मैया यशोदा को उन्हें मातृत्व स्नेह ही बनाए रहने दिया। इसी प्रकार कथा में सनातन धर्म एवं सत्संग तथा ईश्वर की लीलाओं के अनेकों चरित्र प्रभु पद प्रेमियों को आचार्य ने सुनाएं। इस दौरान श्रोताओं में सौरभ बाजपेई (राजा बेटा) राजू स्वर्णकार यजमान एवं अन्य परिवारों के अनेक कुटुंबी जन पुरुष व महिलाओं ने व्यासपीठ से बोले गए भगवत भक्ति से सराबोर अनेक वचनों को श्रवण कर जीवन रूपी नौका के मार्ग को सुगम बनाया।

हत्या की घटना को अंजाम देने वाले अभियुक्त को पुलिस ने आला कत्ल संग किया गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

उन्नाव। थाना अजगैन क्षेत्रांतर्गत ग्राम पुराना खेड़ा में 17 नवम्बर को एक व्यक्ति की हत्या की घटना का सफल अनावरण करते हुए हत्या करने वाले अभियुक्त को मय आलाकत्ल एक कुल्हाड़ी बरामद कर गिरफ्तार किया गया। 17 नवम्बर की रात्रि में ग्राम पुराना खेडा मे अज्ञात व्यक्ति द्वारा तालाब की ?खवाली करने वाले (महेन्द्र सिंह पुत्र स्व0 सूर्यपाल) की हत्या किये जाने के सम्बन्ध में थाना अजगैन पर मुकदमा पंजीकृत किया गया था। जिसका सफल अनावरण करते हुए प्रकाश में आये अभियुक्त ओम प्रकाश 35 उर्फ प्रकाश पुत्र स्व० मंगल निवासी पुरानाखेड़ा मजरा सधीरा थाना अजगैन को सोमवार को प्रभारी निरीक्षक विनोद कुमार मिश्रा व उप निरीक्षक जिब्राइल शेख मय हमराह फोर्स एवं एसओजी प्रभारी प्रदीप कुमार मय एसओजी/सर्विलांस की संयुक्त

टीम द्वारा ग्राम सधीरा देशी शराब ठेका के आगे जलालपुर जाने वाले मार्ग से गिरफ्तार किया गया तथा अभियुक्त की निशादेही से आलाकत्ल एक अदद कुल्हाड़ी बरामद की गई है। प्रकाश में आये ओम प्रकाश उर्फ प्रकाश पुत्र स्व० मंगल निवासी पुरानाखेडा मजरा सधीरा थाना अजगैन जिला को थाने लाकरल पूंछताछ की गयी तो उसने बताया कि मैंने मृतक महेन्द्र सिंह से 10 हजार रुपये ब्याज में लिये थे, जिसमें मूलधन वापस कर दिया था तथा ब्याज के पैसे 3500 रुपए देने शेष थे। जिस कारण मृतक महेन्द्र सिंह उपरोक्त रोज शराब के नशे में मेरे घर आकर मुझे तथा मेरे परिवार वालों को गन्दी गन्दी गालियाँ दिया करता था, जिससे मुझे शर्मिन्दगी व घुटन महसूस होती थी। जिस कारण हम ने 17, 18 नवंबर को गाँव के ही दुर्गेश की दुकान से अपने पैरा बेचने की उधारी के पैसे लिये और ठेके की दुकान पर जाकर तीन पऊवा शराब के लेकर आया, जिसमें दो पौवा महेन्द्र सिंह को पिलाये व 1 पौवा मैने स्वयं पिया, फिर मैं अपने घर वापस चला गया। रात्रि में करीब 12 से 1 बजे के बीच मेरी आँख खुली, मुझे पुनः घुटन होने लगी, जिसके बाद मैं उठा और कुल्हाड़ी लेकर महेन्द्र सिंह के घर गया , महेन्द्र सिंह बाहर मडैय्या में सो रहा था मैं नशे व घुटन के कारण कुल्हाड़ी लेकर उसके चेहरे पर कई बार वार किया फिर मैं वहाँ से कुल्हाडी लेकर गाँव के ही गोकुल के खेत में जाकर गाड़ दिया था।

शानू ने ठंड को देखते हुए गरीबों के बीच बांटे कम्बल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। कडाके की ठंड देखते हुए समाजसेवी शानू गुप्ता ने कर्वी नगर की सेवा बस्ती में जरूरतमन्दों के बीच निःशुल्क कम्बल बांटे।

मंगलवार को हाड कपाऊ ठंड के मद्देनजर समाजसेवी शानू गुप्ता ने नगर की भैरोंपागा सेवा बस्ती में वृद्ध, असहाय, विधवा, निराश्रित, दिव्यांग आदि सैकडों जरूरतमन्दों के बीच कम्बल बांटे। बीते दस वर्षों से वह जरूरतमन्दों को कम्बल बांट रहे हैं। 2022 में भी व्यापार संगठन के राष्ट्रीय महामंत्री/समाजसेवी शानू गुप्ता ने कम्बल बांटते हुए कहा कि

निराश्रितों की सेवा करना उनका दायित्व है। ये स्वयं सेवा आजीवन जारी रहेगी। प्रत्येक सामर्थ मानव को पात्रों की मदद करनी चाहिए। मानव जीवन में कर्म ही महत्वपूर्ण है। हर जरूरतमन्द को उसका अधिकार मिले। संकट समस्या होने पर उनकी मदद हो, यही संकल्प है।

शानू गुप्ता ने कहा कि मानव जीवन में निस्वार्थ भाव से की गई सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती। इस मौके पर आरएसएस के प्रचारक डॉ गोविन्द त्रिपाठी, व्यापारी नेता शेषू जायसवाल, विनोद प्रिंस केशरवानी, सुनील गुप्ता हड्डू, अमित गुप्ता, रामप्रकाश केशरवानी, विनोद आर्य, राजेन्द्र मामा, रवि अग्रहरि, सुनील निषाद, अमित गुप्ता, मो राज, रामसनेही निषाद, सुरेश, हरिश्चन्द्र, प्रभाकर चैधरी, गजराज, श्रीकेश निषाद, कमल साहू, आशीष सोनी, दशरथ, कमलेश, आशा, चुनिया, मिथिया, मुन्नी, बेंदी, रतिया, चुन्नी देवी आदि मौजूद रहे।

पांच साल में चित्रकूट का होगा कायाकल्पः नरेन्द्र

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। नगर पालिका परिषद कर्वी क्षेत्रवासियों को सडक, नाली, पार्क समेत 11 परियोजनाओं का लोकार्पण नगर विकास मंत्री एके शर्मा ने वर्चुअल ढंग से किया। लोकार्पण समारोह टाउनहाल सभागार में चेयरमैन नरेन्द्र गुप्ता की अध्यक्षता में हुआ।

मंगलवार को चेयरमैन नरेन्द्र गुप्ता ने नगर पालिका क्षेत्र में कोठी तालाब के पास पं दीनदयाल उपाध्याय आदर्श नगर पंचायत योजना से दो करोड की लागत से निर्मित अत्याधुनिक पार्क का लोकार्पण किया। एसडीएम कालोनी में बनी सडकों व नालियों का भी लोकार्पण हुआ। ट्राफिक चैराहा से एलआईसी तिराहा तक डिवाइडर रोड तथा नगर में 225 विद्युत पोल व एलईडी लाइन का लोकार्पण हुआ।

चेयरमैन नरेन्द्र गुप्ता ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अयोध्या, काशी की भांति चित्रकूट को भी धार्मिक व पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने को संकल्पित हैं। अगले पांच साल में चित्रकूट का कायाकल्प हो जायेगा। पूरे देश में चित्रकूट पर्यटन की दृष्टि से विश्व के मानचित्र पर नजर आने लगेगा। उन्होंने कहा कि कर्वी नगर पालिका में कोरोना काल के बाद पूरे क्षेत्र में सडक, बिजली, पानी, प्रकाश की व्यवस्था कराई गई है। अभी बहुत कार्य शेष हैं। जो आने वाले समय में पूरे होंगे। इस मौके पर ईओ रामअचल कुरील, सफाई निरीक्षक कमलाकान्त शुक्ला, कर निरीक्षक राहुल पाण्डेय, स्वच्छता समन्वयक शिवा कुमार, वरिष्ठ लिपिक कर्मोत्तम सिंह, सुभाष गुप्ता, ज्ञान गुप्ता, प्रवीण श्रीवास्तव, अशरफ खान, रवी, ज्ञानेन्द्र, शैलेन्द्र सोनी, मो निजाम, अरमान, प्रेम बाल्मीकि आदि मौजूद रहे।

सीवर लाइन पर शिथिलता है शर्मनाकः मदनगोपाल

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। श्री कामदगिरि प्रदक्षिणा प्रमुख द्वार के संत मदनगोपाल दास ने सरकारी एवं विभागीय शिथिलता से मन्दाकिनी नदी के प्रदूषण को मुक्ति न मिल पाने पर रोष जताया है। उन्होंने कहा कि मप्र के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह की सरकार ने मन्दाकिनी में गिरने वाले नाले-नालियों के लिए सीवर लाइन का कार्य न होना शर्मनाक है।

मंगलवार को

कामदगिरि प्रमुख द्वार के संत मदनगोपाल दास ने कहा कि मन्दाकिनी को गन्दे नालों के प्रदूषण से मुक्त न करने पर तीखा आन्दोलन चलाया जायेगा। बताया कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चैहान को भेजे पत्र में कहा है कि शासन से कार्य स्वीकृति होने के बाद भी मन्दाकिनी सीवर लाइन योजना ठंडे बस्ते में पडी है।

उन्होंने कहा कि विडम्बना है कि प्रदेश के अत्यंत महत्वपूर्ण स्थल चित्रकूटधाम की शास्त्रों में वर्णित पावन मन्दाकिनी में दर्जनों गन्दे नालों-नालियों का जल जाता है। इससे मन्दाकिनी प्रदूषित हो रही है। श्रद्धालु प्रदूषित जल से आचमन करने को विवश हैं। मन्दाकिनी किनारे सीवर लाइन योजना के कार्य को चार-पांच वर्ष पहले मप्र शासन ने मंजूरी दी थी। लोक निर्माण विभाग को कार्यदायी संस्था बनाया गया था। काफी समय बीतने के बाद भी कार्य शुरू न होना खासा शर्मनाक है।

छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों के प्रति किया जागरूक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक अतुल शर्मा के निर्देश पर एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी व सीओ यातायात एसपी सोनकर की देखरेख में यातायात निरीक्षक मनोज कुमार व यातायात प्रभारी योगेश कुमार यादव ने चित्रकूट इंटर कालेज कर्वी में जागरूकता गोष्ठी की।

मंगलवार को जागरूकता गोष्ठी में यातायात माह नवम्बर के क्रम में सभी को यातायात नियमों के बारे में जानकारी दी गई। छात्रों से कहा कि अपने परिजनों से यातायात नियमों

का पालन करने को कहें। दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट का प्रयोग अवश्य करें। वाहन चलाने के दौरान मोबाइल फोन का प्रयोग न करें। बिना ड्राइविंग लाइसेंस के वाहन न चलायें। 18 वर्ष की आयु पूरी होने के बाद ड्राइविंग लाइसेंस अवश्य बनवायें।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि साइकिल व वाहन से स्कूल आते समय हमेशा बाईं ओर चलें और सावधानी से वाहन चलायें। मिशन शक्ति अभियान के तहत छात्राओं को विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरों की जानकारी दी। छात्र-छात्राओं की समस्याओं को सुनकर उन्हें सशक्त होने को प्रेरित किया। गोष्ठी में वर्तमान में हो रहे साइबर अपराधों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। सोशल साइट्स का प्रयोग सावधानी से करने के प्रति चेताया। गोष्ठी में चित्रकूट इंटर कालेज के छात्र-छात्रायें व प्रधानाचार्य डॉ रणवीर सिंह चैहान मौजूद रहे।

लेखाधिकारी की हरकतों में नहीं हो रहा कोई सुधारः डीएम से कार्यवाही की मांग

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। लोक निर्माण विभाग निर्माण खण्ड प्रथम के लेखाधिकारी वीरेन्द्र कुमार की हरकतों में कोई सुधार नहीं हो रहा है। उनके आये दिन कार्यालय से नदारद रहने व मनमानी ढंग से कार्यालय में आने से विभागीय कार्य बाधित होने के साथ ठेकेदारों के भुगतान भी बाधित हो रहे हैं। लेखाधिकारी वीरेन्द्र कुमार की लापरवाही इस कदर है कि वह एक्सईएन का फोन भी नहीं उठाते और काल जाने के बाद भी जवाब तक नहीं देते।

मंगलवार को लोनिवि निर्माण खण्ड के लेखाधिकारी वीरेन्द्र कुमार खबर छपने के बाद भी कार्यालय में समय से नहीं आये। वह कार्यालय में आज एक बजे के बाद आये। उनसे जब इस संबंध में पूंछा गया तो उन्होंने बताया कि वह लघु सिंचाई में भी अतिरिक्त कार्य देखते हैं। इसके चलते कार्यालय में समय से नहीं आ पाते। उनसे जब कहा गया कि सप्ताह में तीन दिन लोनिवि में और तीन दिन लघु सिंचाई विभाग में समय निर्धारित कर लें। इस पर भी उन्होंने संतोष जनक जवाब नहीं दिया। कहा कि ऐसे कैसे सम्भव है। जब कोई बिल अचानक आ जाते हैं तो उन्हें जाना ही पडता है।

लेखाधिकारी वीरेन्द्र कुमार कुछ ठेकेदारों के बेहद खास हैं। उनके काम तत्काल कर देते हैं, जबकि अन्य तमाम ठेकेदारों के कार्य नहीं करते हैं। इसे लेकर ठेकेदारों व विभागीय कर्मचारियों ने रोष जताया है। उनके अधिकारी एक्सईएन कृष्ण कुमार ने कहा कि वीरेन्द्र कुमार की लापरवाही इस कदर है कि वह फोन नहीं उठाते। काल जाने पर जवाब भी नहीं देते। इस संबंध में वीरेन्द्र कुमार से बात की गई तो उन्होंने कोई संतोषजनक उत्तर नहीं दिया। जिलाधिकारी से ठेकेदारों ने मांग की है कि वीरेन्द्र कुमार की हरकतों पर विराम लगाया जाये, ताकि कार्य बाधित न हो।

अव्वल खिलाडियों को किया पुरस्कृत

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पं दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी पर क्षेत्रीय खेल कार्यालय चित्रकूट धाम मंडल ने जिला स्तरीय बालक-बालिका प्रतियोगिता स्पोर्ट्स स्टेडियम में आयोजित किया। खेल विकास प्रोत्साहन समिति एवं श्रीजी इंटरनेशनल के आजीवन सदस्य अजय कुमार अग्रवाल ने शुभारम्भ किया।

मंगलवार को राजकीय इंटर कालेज, सुषमा स्वरुप, केन्द्रीय विद्यालय, सरस्वती विद्या मन्दिर, सरस्वती शिशु मन्दिर, स्व लालभाई पटेल इंटर कालेज के छात्र-छात्राओं ने प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। 188 बालिकायें एवं 242 बालकों ने पहली बार जनपदीय प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। निर्णायक की भूमिका

अवधेश कुमार सिंह, रमेश सिंह, प्रकाश सिंह, श्यामसुन्दर, श्रीकृष्ण, अंगद सिंह, कामता प्रसाद, सुभम, अख्तर, शैलेन्द्र कुमार ने निभाई।

विजयी खिलाडियों को जिला प्रोवेशन अधिकारी ने मेडल पहनाकर पुरस्कृत किया। बालक-बालिका के प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले खिलाडियों को पांच सौ, चार सौ व 430 रुपये उनके खातों में भेजा जायेगा। क्षेत्रीय क्रीडा अधिकारी विजय कुमार ने बताया कि बेटी बचाओ बेटी पढाओ बेटियों को खेलों में आगे बढाओ का आयोजन जल्द स्पोर्ट्स स्टेडियम में किया जायेगा। उन्होंने अभ्यास के लिए बालक-बालिकाओं को स्टेडियम में आमंत्रित किया, ताकि प्रदेश में पदक प्राप्त कर सकें।

पत्रकारों ने डीएम से की मुकदमा समाप्त कराने की मांग

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। प्रेस क्लब अध्यक्ष सत्यप्रकाश द्विवेदी की अगुवाई में पत्रकारों ने नारेबाजी करते हुए जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द के कार्यालय पहुंचे। यहां पत्रकारों ने जिलाधिकारी को सौंपे ज्ञापन में कहा कि तीन पत्रकारों पर एक सिपाही ने कोतवाली में उत्पीडन की रिपोर्ट दर्ज कराई है। इस मामले को तत्काल समाप्त किया जाये।

मंगलवार को प्रेस क्लब अध्यक्ष सत्यप्रकाश द्विवेदी ने जिलाधिकारी को सौंपे ज्ञापन में कहा कि इन दिनों निरंतर पत्रकारों के उत्पीडन की घटनायें हो रही हैं। इससे निष्पक्ष पत्रकारिता करने वालों का मनोबल गिर रहा है।

विद्युत कर्मचारियों ने ऊर्जा निगमों के विरोध में किया आन्दोलन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। विद्युत कर्मचारी संयुक्त संघर्ष समिति ने ऊर्जा निगमों के शीर्ष प्रबंधन के स्वेच्छाचारी रवैये के विरोध में मांगों के समाधान को कार्य बहिष्कार आन्दोलन को तेज करते हुए जिला समेत पूरे प्रदेश में सवेरे आठ बजे से शाम पांच बजे तक कार्य बहिष्कार किया।

मंगलवार को कार्य बहिष्कार आन्दोलन की अध्यक्षता इं शिवम गुप्ता एवं संचालन उमतलाल ने किया। सार्थक निदान न होने पर बेमियादी कार्य बहिष्कार समिति के लखनऊ के निर्देश पर जारी रहेगा। संयुक्त संघर्ष समिति के बैनर तले तमाम घटक श्रम संघों, सेवा संगठनों ने शान्तिपूर्ण ढंग से कार्य बहिष्कार आन्दोलन को तेज करते हुए प्रदेश व्यापी सभायें कर नारेबाजी कर प्रबंधन के प्रति आक्रोश जताया। जिला मुख्यालय में विरोध सभा में अधीक्षण अभियंता इं बृजेश कुमार ने कहा कि ऊर्जा निगमों के शीर्ष प्रबंधन के स्वेच्छाचारी रवैये के विरोध में नकारात्मक कार्य प्रणाली से ऊर्जा

निगमों को हो रही क्षति रोकने एवं निगमों में पैदा किये गये भय के माहौल को समाप्त करने को बिजली कर्मियों की वर्षों से लम्बित मांगों का समाधान किया जाये। प्रदेश व्यापी कार्य बहिष्कार के विरोध में हजारों बिजली अभियंता, जूनियर इंजीनियर व बिजली कर्मचारी शामिल रहे। संयुक्त संघर्ष समिति की 27 अक्टूबर को दी नोटिस पर ऊर्जा प्रबंधनों ने कोई वार्ता नहीं की। विद्युत कर्मचारी संयुक्त संघर्ष समिति के संयोजक इं शिवम गुप्ता ने आन्दोलन का समर्थन करते हुए सूबे के ऊर्जा मंत्री अरविन्द कुमार शर्मा से अपील की है कि तत्काल मामले में दखल देकर वार्ता की सार्थक पहल करें, ताकि ऊर्जा निगमों में अनावश्यक टकराव न हो। चेताया कि विद्युत कर्मियों का बेमियादी कार्य बहिष्कार दौरान उत्पीडन हुआ तो हडताल शुरू की जायेगी। मुख्यालयों में शाम पांच बजे मशाल जुलूस निकाला गया। सभा में इं बृजेश कुमार, इं आरएस वर्मा, इं अनिल सिंह, इं विमलेश कुमार, इं महाकुंड, इं आशीष सिंह, इं अनुपम कुमार, इं उमतलाल, इं उमाशंकर, इं प्रदीप गुप्ता, इं महेश कुमार, लक्ष्मीनारायण पाल, शिवसागर सिंह, विवेक कुमार, प्रशांत यादव, जुनैद हुसैन, सुशीलचन्द्र जोशी, हनीफ सौदागर, आशीष पाण्डेय, शिवकुमार, मजहर हसन, कमल कुमार, जिम्मी, रामचन्द्र, दिलीप शर्मा व दीनदयाल समेत तीन सौ कर्मचारी धरना प्रदर्शन व कार्य बहिष्कार में मौजूद रहे।

पाकिस्तानी सुरक्षा बलों से मुठभेड़ में टीटीपी कमांडर समेत 11 आतंकी ढेर

पेशावर। आतंक को बढ़ावा देने वाला पाकिस्तान अब खुद आतंकियों से जूझ रहा है। ताजा घटनाक्रम में उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान में सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ के दौरान टीटीपी कमांडर समेत दस आतंकी मारे गए। सुरक्षा सूत्रों ने यह जानकारी दी है।

सूत्र ने बताया कि खैबर पख्तूनख्वा प्रांत के दक्षिण वजीरिस्तान कबायली जिले की सीमा से लगे अशांत लक्की मारवत जिले में तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के आतंकियों और सुरक्षा बलों के बीच मुठभेड़ में टीटीपी कमांडर टीपू और दस अन्य आतंकी मारे गए। सूत्र ने कहा कि भीषण मुठभेड़ में कुछ सुरक्षा बलों के भी हताहत होने की खबर है, लेकिन

खबर लिखे जाने तक इसकी पुष्टि नहीं हो सकी है। अफगान सीमा से आने वाले टीटीपी लड़ाकों कों सुरक्षा बलों ने घेर लिया था, जिसके बाद गोलीबारी हुई। कथित तौर पर आतंकी पूरी तरह से यूएस नाइट विजन डिवाइसेस (एनवीडी) उपकरण और भारी हथियारों से लैस थे।

स्वतंत्र रिपोर्टों के अनुसार, टीटीपी, जो पूरे पाकिस्तान में शरिया के शासन की मांग करता है, ने पाकिस्तान सरकार के साथ संघर्षविराम समझौते को समाप्त करने की घोषणा की है। टीटीपी ने अपने एक बयान में कहा कि वह मुजाहिदीन (आतंकियों) के खिलाफ अलग-अलग इलाकों में चल रहे सैन्य अभियान की वजह से यह कदम उठाया है।टीटीपी की स्थापना 2007 में की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य पूरे पाकिस्तान में इस्लाम के अपने सख्त ब्रांड को लागू करना है। टीटीपी को पाकिस्तान तालिबान के रूप में भी जाना जाता है।

पाकिस्तान में कट्टरपंथियों की शर्मनाक हरकत, अहमदी समुदाय की कई कब्रों के साथ की बेअदबी

लाहौर। पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के साथ होने वाला दुर्व्यवहार एक बार फिर दुनिया के सामने उजागर हुआ है। इस बार अल्पसंख्यक अहमदी समुदाय की कई कब्रों के साथ मजहबी कट्टरपंथियों ने इस्लामी प्रतीकों का इस्तेमाल करने के लिए कथित तौर पर बेअदबी की है। जमात अहमदिया पंजाब के प्रवक्ता आमिर महमूद के मुताबिक ज्ञात लोगों ने लाहौर से करीब 100 किलोमीटर दूर हाफिजाबाद जिले के प्रेम कोट कब्रिस्तान में कब्रों के पत्थरों को अपवित्र किया गया। समुदाय के कब्रिस्तान में कई कब्रों के मकबरे पर इस्लामी आयतें खोदी गई हैं। उन्होंने कहा कि कब्रों को नुकसान पहुंचाने वालों ने आपत्तिजनक शब्द भी लिखे, जो परिवारों के लिए बेहद दुखद है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में रह रहे

अहमदी अपनी मौत के बाद भी चैन से नहीं हैं। अहमदी अपनी कब्रों में सुरक्षित नहीं हैं। महमूद ने अल्पसंख्यक समुदाय की कब्रों को अपवित्र करने में शामिल लोगों को गिरफ्तार करने की मांग की।पहले भी पंजाब के अन्य अहमदी कब्रिस्तानों में इस तरह की घटनाएं हो चुकी हैं, लेकिन एक भी अपराधी को गिरफ्तार नहीं किया गया और न ही उस पर मुकदमा चलाया गया। इस साल अगस्त में, पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में अहमदी समुदाय की 16 कब्रों को कथित रूप से लाहौर से लगभग 150 किलोमीटर दूर फैसलाबाद जिले के चक 203 आरबी मनावाला में एक कब्रिस्तान में धार्मिक चरमपंथियों द्वारा कब्रों पर इस्लामी प्रतीकों का उपयोग करने के लिए अपवित्र किया गया था। अल्पसंख्यक, विशेष रूप से अहमदी, पाकिस्तान में बहुत कमजोर हैं और उन्हें अक्सर धार्मिक चरमपंथियों द्वारा निशाना बनाया जाता है। पूर्व सैन्य तानाशाह जनरल जिया-उल हक ने अहमदियों के लिए खुद को मुसलमान कहना या इस्लाम के रूप में अपने विश्वास का उल्लेख करना एक दंडनीय अपराध बना दिया।

जन प्रदर्शनों ने शी जिनपिंग को झुकाया, जीरो कोविड नीति बदलने के संकेत

बीजिंग। चीन के कई शहरों में हुए विरोध प्रदर्शनों के बाद अब संकेत हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी की सरकार अपनी कोविड-19 नियंत्रण नीति में बड़े बदलाव की घोषणा करने वाली है। नई नीति में संक्रमण के रोकथाम से ज्यादा जोर संक्रमित मरीजों के इलाज पर दिया जाएगा। वेबसाइट एशिया टाइम्स ने एक विशेष रिपोर्ट में बताया है कि बहुचर्चित जीरो कोविड में बदलाव के बारे में महीने भर से विचार किया जा रहा था। पिछले 11 नवंबर को कोविड नियंत्रण के नए 20 सूत्रीय उपाय घोषित किए गए थे। लेकिन स्थानीय अधिकारियों ने उसके मुताबिक अपने तौर-तरीके नहीं बदले। उसका नतीजा अनेक शहरों में हुए प्रदर्शनों के रूप में सामने आया है। इसके बाद राष्ट्रपति शी जिनपिंग की सरकार के लिए जीरो कोविड नीति में ठोस बदलाव प्राथमिकता बन गया है।

एशिया टाइम्स की खबर के मुताबिक जनवरी की शुरुआत से कोविड नियंत्रण की नीति में और ढील दी जाएगी। उस समय सरकार एलान करेगी कि महामारी खत्म हो गई है और अब कोविड सिर्फ आम संक्रामक बीमारी के रूप में मौजूद है। इसके साथ ही स्थानीय और राज्यों के उन अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई शुरू की जाएगी, जिन्होंने 20 सूत्रीय नए उपायों को लागू करने में कोताही दिखाई थी। वैसे कुछ सूत्रों ने कहा है कि बीते दिनों में नए संक्रमण के मामलों में तेज उछाल भी एक कारण रहा, जिससे अधिकारियों ने 20 सूत्री उपायों के मुताबिक ढिलाई नहीं बरती।

मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक लॉकडाउन और खास इलाकों में सबकी कोविड जांच करने की नीति के खिलाफ स्थानीय स्तरों पर प्रदर्शन बीते कई दिनों से जारी थे। लेकिन शिनजियांग प्रांत की राजधानी उरुमची में बहुमंजिली इमारत में आग लगने की घटना (जिस में 10 लोगों की जान गई) के बाद इन प्रदर्शनों ने व्यापक रूप ले लिया। खास कर बीजिंग स्थित सिंगहुआ यूनिवर्सिटी जैसे खास संस्थान में विरोध प्रदर्शन होने की घटना ने कम्युनिस्ट पार्टी नेतृत्व को चिंतित किया है। पश्चिमी मीडिया की रिपोर्टों में इन प्रदर्शनों को 1989 में बीजिंग पर तियानानमेन चौराहे छात्रों के लगे जमावड़े के बाद का सबसे बड़ा विरोध प्रदर्शन बताया गया है।

विश्लेषकों के मुताबिक अभी खड़ी हुई इस समस्या का असल कारण बीते दो वर्ष में कोविड पर काबू पाने में चीन की नाकामी है। इसके लिए चीन में बनी कोविड वैक्सीन की कमजोरी को जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। बताया जाता है कि ये वैक्सीन शुरुआती कोविड-19 वायरस से बचाव में तो सक्षम साबित हुए, लेकिन बाद में इसके जो स्ट्रेन और वैरिएंट आए, उनसे बचाव में ये अप्रभावी रहे। इसलिए अब ये चर्चा है कि चीन सरकार अपने देश के अंदर विदेश में बनी वैक्सीन के इस्तेमाल की इजाजत दे सकती है। एशिया टाइम्स के मुताबिक चीन सरकार इस बारे में पहले से विचार कर रही थी। इस महीने के आरंभ में जर्मनी के चांसलर ओलोफ शोल्ज की चीन यात्रा के दौरान उनके साथ बीजिंग आए 12 कंपनियों के सीईओ में बायोएनटेक वैक्सीन की निर्माता कंपनी के सीईओ उगुर सहीन भी थे। समझा जाता है कि उस दौरान वैक्सीन उत्पादन में जर्मनी और चीन के बीच सहयोग के बारे में बातचीत हुई थी।

एप्पल की ट्विटर को ऐप स्टोर से बाहर करने की धमकी

वाशिंगटन। आई फोन निर्माता कंपनी एप्पल ने सोशल साइट ट्विटर को अपने ऐप स्टोर से हटाने की धमकी दी है। कंपनी ने इसका कारण भी साफ नहीं किया है। यही नहीं आईफोन निर्माता कंपनी ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर ट्विटर का विज्ञापन भी बंद कर दिया है। यह जानकारी किसी और ने नहीं, बल्कि ट्विटर और टेस्ला के अरबपति सीईओ एलन मस्क ने दी है। मस्क ने कहा कि एप्पल सामग्री मॉडरेशन पर ट्विटर पर दबाव डाल रहा है। एप्पल का यह कदम असामान्य तो कतई नहीं है। उसने गैब और पार्लर ऐप को भी हटा दिया है। उल्लेखनीय है कि मस्क ने पिछले महीने 44 अरब डालर में ट्विटर को खरीदा है। मस्क ने एक ट्वीट में एप्पल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी टिम कुक को टैग करते हुए पूछा है कि यहां क्या हो रहा है?' एप्पल ने इसका कोई जवाब नहीं दिया है।

संयुक्त राष्ट्र ने बोला, शांतिपूर्ण प्रदर्शन करना सबका अधिकार, अमेरिका ने भी विरोध जताया

वाशिंगटन।चीन में सरकार के विरोध में सड़कों पर उतर कर शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन करने वालों के दमन करने पर संयुक्त राष्ट्र ने चीन से लोगों के अधिकार का सम्मान करने की अपील की है। संयुक्त राष्ट्र ने चीन से शांतिपूर्ण विरोध के अधिकार का सम्मान करने का आह्वान किया। रिपोर्ट के अनुसार, संयुक्त राष्ट्र ने चीन से शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शनों में भाग लेने के लिए लोगों को हिरासत में नहीं लेने का आग्रह किया, क्योंकि बीजिंग राजनीतिक आज़ादी और कोविड-19 लॉकडाउन को समाप्त करने की मांग को लेकर देश भर में हो रहे प्रदर्शनों पर अंकुश लगाने की कोशिश कर रहा है।

ज्ञात रहे कि चीन में इन दिनों सरकार की जीरो कोविड नीति के विरोध मेंजनता सड़कों पर है। विरोध प्रदर्शनों की तेजी को देखते हुए जिनपिंग सरकार लोगों को जेल में डालना शुरू कर दिया है। अमेरिका ने भी चीन पर हमला बोलते हुए कहा कि चीन की शून्य कोविड नीति के काम करनेकी संभावना नहीं है और कहा कि दुनिया भर के सभी लोगों को शांतिपूर्णप्रदर्शन करनेका अधिकार है। अमेरिका का यह बयान चीन में उसकी शून्य कोविड नीति के खिलाफ होते प्रदर्शनों के बीच आया है। व्हाइट हाउस के राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के एक प्रवक्ता ने कहा कि हम अमेरिका में शून्य कोविड नीति का पालन नहीं कर रहे हैं। हम समझते हैं कि चीन के लिए शून्य कोविड रणनीति के जरिए इस वायरस को नियंत्रित करना पाना बहुत मुश्किल होगा। चीन के कई हिस्सों में शून्य कोविड नीति के खिलाफ प्रदर्शन हो रहे हैं। इस नीति के तहत चीन एक बार किसी इमारत या इलाके में कोरोना वायरस का मामला मिलने के बाद, उसे पूरी तरह से सील कर देता है जिस वजह से लोगों को असुविधा होती है।

जेम पोर्टल पर कारोबार एक लाख करोड़ रुपये के पार पहुंचा

नई दिल्ली। केंद्र सरकार के ई-मार्केटप्लेस (जेम) पोर्टल ने एक लाख करोड़ रुपये के मूल्य के खरीद का आंकड़ा पार कर लिया है। जेम के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) पीके सिंह ने यह जानकारी दी है।

पीके सिंह ने मंगलवार को जारी एक बयान में कहा कि ई-मार्केटप्लेस पोर्टल पर सरकारी खरीद 8 महीने में एक लाख करोड़ रुपये के पार पहुंच गई है। उन्होंने कहा कि वित्त वर्ष 2022-23 के अंत तक हम 1.5 लाख करोड़ रुपये के लक्ष्य को पार कर लेंगे। सिंह ने कहा कि इससे सरकार को 10-15 फीसदी की बचत हुई है। उन्होंने बताया कि ई-मार्केटप्लेस पोर्टल का सकल मूल्य चालू वित्त वर्ष के अंत तक अमेजन और फ्लिपकार्ट से आगे निकलने की उम्मीद है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
Title UPHIN 29506
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।

श्रीलंका की नौसेना ने गिरफ्तार किए 24 भारतीय मछुआरे, पांच नावें भी जब्त

कोलंबो। श्रीलंका की नौसेना ने अवैध शिकार के आरोप में 24 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया है। भारतीय मछुआरों की पांच नावें भी जब्त कर ली गयी हैं।

श्रीलंका की सेना ने मंगलवार को आधिकारिक बयान जारी कर जानकारी दी कि उत्तरी जाफना प्रायद्वीप में श्रीलंका के जल क्षेत्र में घुसकर अवैध रूप से शिकार करने के आरोप में 24 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया गया है। बयान में कहा गया है कि उत्तरी जाफना प्रायद्वीप में करैनगर के तट पर श्रीलंकाई नौसेना और श्रीलंका तटरक्षक बल के एक संयुक्त अभियान में शाम मछुआरों को गिरफ्तार किया गया। बाद में उन्हें कांकेसंथुराई बंदरगाह लाया गया और आगे की कार्रवाई के लिए मछली पकड़ने के निरीक्षणालय को सौंप दिया गया। इन मछुआरों के साथ उनकी पांच नावों को भी जब्त कर लिया है।

श्रीलंका की नौसेना ने कहा कि इस साल अब तक कुल 252 भारतीय मछुआरों को श्रीलंकाई जलक्षेत्र में अवैध शिकार के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। मछुआरों का मुद्दा भारत

और श्रीलंका के बीच संबंधों में एक विवादास्पद मुद्दा है। दरअसल, श्रीलंका से तमिलनाडु को अलग करने वाली पानी की एक संकरी पट्टी पाक जलडमरूमध्य दोनों देशों के मछुआरों के लिए मछली पकड़ने का एक समृद्ध जलक्षेत्र है।

समय-समय पर भारतीय मछुआरों को श्रीलंकाई अधिकारियों द्वारा अंतरराष्ट्रीय समुद्री सीमा रेखा को कथित रूप से पार करने और श्रीलंकाई जल में मछली पकड़ने के लिए पकड़े जाने के मामले सामने आए हैं।

हवाई में ज्वालामुखी में तेज विस्फोट, लावा से 20 लाख लोग खतरे की जद में

होनोलुलु। हवाई के मौनालाओ में स्थित ज्वालामुखी में तेज विस्फोट हुआ है। इस विस्फोट से राख और मलबा आसपास के इलाकों में गिर रहा है। यह ज्वालामुखी देररात बिग द्वीप पर फटा। इससे ज्वालामुखी के शिखर काल्डेरा में तेज धमाका हुआ। 38 साल में पहली बार ज्वालामुखी में इतना तेज विस्फोट हुआ है।

अधिकारियों ने हवाई के बिग द्वीप पर रहने वाले लोगों को सबसे खराब स्थिति में तैयार रहने की चेतावनी दी है। ज्वालामुखी के शिखर पर हाल में बार-बार भूकंप आने के बाद से विस्फोट शुरू हुआ है। इससे पहले वर्ष 1984 में ज्वालामुखी में विस्फोट हुआ था। यूएस जियोलॉजिकल सर्वे ने

28 नवंबर को कहा था कि लावा शिखर तक ही सीमित है और इससे आसपास रहने वाले लोगों को कोई खतरा नहीं है। मगर विस्फोट के बाद से बिग आईलैंड पर लगभग 20 लाख लोगों को चेतावनी दी गई है कि विस्फोट होने से ज्वालामुखी बहुत गतिशील हो सकता है और लावा प्रवाह का स्थान तेज गति से बदल सकता है। अधिकारियों ने आईलैंड में रह रहे लोगों को चेताया है कि अगर लावा का प्रवाह आबादी वाले क्षेत्रों की ओर बढ़ने लगे तो वो जल्द से जल्द अपने घरों को खाली करने के लिए तैयार रहें। लावा से पैदा होने वाले खतरों को देखते हुए निवासियों को ज्वालामुखी के आसपास के इलाकों से बिल्कुल दूर रहने की सलाह दी गई है। अधिकारियों के मुताबिक हवाई के मौनालाओ में स्थित ज्वालामुखी में विस्फोट के बाद से सल्फर डाईऑक्साइड गैस निकल रही है। यह लोगों के लिए बहुत ही हानिकारक है।

जापान में जन्मदर और नीचे, सरकार ने माना चिंताजनक, कहा- युवाओं को संतानों के लिए करेंगे प्रोत्साहित

टोक्यो। जापान में बच्चों की जन्मदर पिछले साल के रिकॉर्ड से और नीचे पहुंच गई है। सरकारी प्रवक्ता ने हालात को चिंताजनक करार दिया है। चीफ कैबिनेट सचिव हिरोकाजु मत्सुनो ने वादा किया है कि सरकार युवाओं को विवाह करने व ज्यादा संतानों को जन्म देने के लिए प्रोत्साहित करने के कदम उठाएगी। जापान में इस साल जनवरी से सितंबर तक केवल 5,99,636 बच्चों ने जन्म लिया। यह पिछले साल के मुकाबले 4.9 फीसदी कम है। इससे आशंका है कि पूरे साल 2022 में जन्म लेने वाले बच्चों की तादाद पिछले साल के 8,11,000 से भी नीचे पहुंच सकती है। जापान दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था है, लेकिन यहां जीवन-यापन की कीमतें काफी ज्यादा हैं और वेतन बढ़ने की रफ्तार खासी सुस्त। रूढ़िवादी सरकार समाज को बच्चों, महिलाओं और अल्पसंख्यकों के लिए समावेशी बनाने में पिछड़ गई है। सरकार की ओर से लोगों को संतानें पैदा करने के लिए अब तक दिए गए प्रोत्साहनों का प्रभाव सीमित रहा है। यहां गर्भावस्था, संतान के जन्म और बच्चों की देखभाल के लिए आर्थिक मदद दी जाती है। जापान में वर्ष 1973 में 21 लाख बच्चों ने जन्म लिया था। इसके बाद से यह संख्या लगातार घट रही है। हालात न सुधरे तो इसके 2040 तक केवल 7,40,000 रह जाने की आशंका है। जापान की 12.5 करोड़ जनसंख्या में 14 साल से लगातार गिरावट आ रही है। यह लगातार घट रही है।

सोमालिया की राजधानी में राष्ट्रपति भवन के पास होटल पर आतंकी हमला, चार मरे

- दो मंत्री घायल, एक मंत्री बाल-बाल बचे

मोगादिशु। सोमालिया की राजधानी मोगादिशु में राष्ट्रपति भवन के पास एक होटल पर जोरदार आतंकी हमला हुआ है। हमले में चार लोगों की मौत हो गयी है। हमले में सोमालिया के दो मंत्री घायल हो गए हैं और एक मंत्री बाल-बाल बचे हैं। हमले की जिम्मेदारी आतंकी संगठन अल-शबाब ने ली है।

सोमालिया की राजधानी मोगादिशु एक बार फिर आतंकी हमले का शिकार हुआ है। अब सोमालिया के राष्ट्रपति भवन के पास स्थित प्रमुख होटल विला रोज पर आतंकी हमला हुआ है। इस होटल में अधिकतर मंत्री और सरकारी अधिकारी ठहरते हैं। शाम होटल में अचानक एक विस्फोट हुआ और गोलियां चलने लगीं। हमले में चार लोगों के मारे जाने की पुष्टि हो चुकी है।

हमले के समय सोमालिया के पर्यावरण मंत्री एडम ओहिरसी, आंतरिक सुरक्षा मंत्री मोहम्मद अहमद व रक्षा उपमंत्री अब्दिफताह कासिम होटल में ही मौजूद थे। दावा किया गया है कि आंतरिक सुरक्षा मंत्री मोहम्मद अहमद व रक्षा उपमंत्री अब्दिफताह कासिम हमले में घायल हो गए हैं। पर्यावरण मंत्री एडम ओहिरसी बाल बाल बचे हैं। पुलिस ने होटल से भारी संख्या में

सोमालिया की राजधानी मोगादिशु एक बार फिर आतंकी हमले का शिकार हुआ है। अब सोमालिया के राष्ट्रपति भवन के पास स्थित प्रमुख होटल विला रोज पर आतंकी हमला हुआ है। इस होटल में अधिकतर मंत्री और सरकारी अधिकारी ठहरते हैं।

लोगों को बाहर निकाला है। हमले की जिम्मेदारी आतंकी संगठन अल-शबाब ने ली है।

दरअसल, एक दिन पहले ही सोमालिया की सेना ने आतंकी संगठन अल-शबाब के ठिकानों पर हमला कर 100 आतंकियों को मार गिराया था। ऐसे में माना जा रहा है कि अपने साथियों की मौत का बदला लेने के लिए अल-शबाब ने होटल पर हमला किया है। एक महीने में यह दूसरा बड़ा आतंकी हमला है। इससे पहले 29 अक्टूबर को 2 कारों में धमाके हुए थे, जिसमें 100 लोगों की मौत हो गयी थी और 300 लोग घायल हो गए थे।

पाक के नए आर्मी चीफ बने आसिम मुनीर

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के 16वें आर्मी चीफ जनरल कमर जावेद बाजवा 6 साल बाद इस पोस्ट से रिटायर हो गए हैं। उनकी जगह फोर स्टार रैंक पाने वाले आसिम मुनीर ने ले ली है। मंगलवार को बाजवा ने रावलपिंडी GHQ हेडक्वॉर्टर में बैटन ऑफ कमांड या कमांड स्टिक मुनीर को सौंपी। बैटन ऑफ कमांड लेने के बाद मुनीर फॉर्मली आर्मी चीफ बन गए हैं।

सेरेमनी में लोगों को संबोधित करते हुए बाजवा ने आसिम मुनीर को बधाई दी और उम्मीद जताई की उनके चीफ बनने से पाकिस्तान को फायदा होगा। बाजवा ने मुनीर के साथ अपने काम के 24 सालों को भी याद किया। रिटायरमेंट डेट से एक दिन पहले सोमवार को जनरल बाजवा ने राष्ट्रपति आरिफ अल्वी और प्रधानमंत्री शाहबाज शरीफ से मुलाकात की। शरीफ ने कहा- बाजवा साहब की वजह से ही हम FATF की ग्रे लिस्ट, कोरोना वायरस और बाढ़ जैसे मुश्किल हालात से निकल सके।

22 करोड़ लोगों की नजर

पाकिस्तान की वेबसाइट 'आज न्यूज' की रिपोर्ट के मुताबिक- डेमोक्रेटिक इंस्टीट्यूशन्स की बजाए फौज ही 22 करोड़ अवाम वाले मुल्क की सबसे बड़ी ताकत है। 8 महीने इसी रस्साकशी में गुजर गए कि

जनरल बाजवा को एक और एक्सटेंशन मिलेगा या फिर कोई नया आर्मी चीफ आएगा। बहरहाल, कयासों का दौर थमा और पिछले हफ्ते साफ हो गया कि आसिम मुनीर नए आर्मी चीफ होंगे। मंगलवार को रावलपिंडी के 6आर्मी हेडक्वॉर्टर में 'चेंज ऑफ बैटन कमांड सेरेमनी' होगी। आम जुबान में इसे 'चेंज ऑफ स्टिक सेरेमनी' भी कहा जाता है।

आउटगोइंग आर्मी चीफ जनरल बाजवा अपने करीबी दोस्त और सहयोगी आसिम मुनीर को बैटन ऑफ कमांड सौंपेंगे। यह स्टिक एक खास तरह की लकड़ी से बनी होती है। इस लकड़ी को 'मलाक्का केन' कहा जाता है। आर्मी में इस स्टिक की बेहद अहमियत है।

रिपोर्ट के मुताबिक- अगर पाकिस्तान की सियासत को छोड़ दिया जाए तो यहां हमेशा से फौज ही ताकतवर रही है। उसके रसूख और दबदबे के आगे सियासतदान छोटे पड़ते रहे हैं। यही वजह है कि 1947 में पाकिस्तान के जन्म के बाद करीब-करीब आधा वक्त यहां मिलिट्री रूल रहा।